

वचनतरंगिणी

जिसको

ग्रन्थकार पण्डित श्रीदुबे भगवान् दासात्मज भुव-
देव उपनाम (रज्जीदुबे) गढ़ाकोटा ज़िला
सागर मध्य प्रदेशनिवासी ने एक राज पुत्र
चन्द्र कान्त नामी का विषयले बातों का
बग़ीचालगा फल फूल पत्र संयुक्त
मन रमण हेतु निर्माण किया

पहलीबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखानेमें छपी ॥
नवम्बर सन् १८९३ ई० ॥

८ पुज ४ वर्क

वचनतरंगिणीकी भूमिका।

दोहा गणपति चरण सरोजरज सरस्वति पदजलजात।
बन्दत श्रीगुरुपग कमल आनँद उर न समात॥

सम्पूर्ण विघ्नहर्ता, आनन्दकर्ता, श्रीगजवदन सुख सदनको वन्दनकर सुन्दर मतिदाता सरस्वति माता का ध्यान धर-स्वमतिपाय गुरु चरणमनाय। अगणित धन्यवाद उस जगत्पति जगदीश्वरको अर्पणकर॥

यह ग्रन्थकर्ता रंगलालात्मज भगवानदास तस्यात्मज "भवदेव" उपनामरज्जीदुबे गढ़ाकोटा जिला सागर मध्यप्रदेश निवासीने यह मनोरंजन नवीनसंग्रह स्वमतिसे जिसमें स्त्रीस्वभावकी चंचलता, वर्तमान पुरुषों की प्रकृतिकी बाहुल्यताकेकारण आपद्ग्रस्तहोना और उनआपत्तियोंकी व्याख्या पूर्ण दर्शितकीहै॥ यह पुस्तक पठनकरतेही पाठकोंकेमनउत्सुककरएककथासमाप्तकर, द्वितीय प्रारम्भका चाव बढ़ा स्वतः आद्योपान्त ग्रन्थकार के परिश्रमपर सैर करायेगी। पश्चात् उनके निर्मल चित्त को जो कभी रमदान्धहो चन्द्रकान्तकी भांति विश्वमोहनियोंकीओर भुकास्वयं आपत्तिग्रस्तहोनेकोउद्यतहो यह जंबूर जिसके मुखमें मधु और पूंछ में डंक है पाने की इच्छा करताहै चांचल्यताको रोक नीति शिक्षा देता है। कदाचित् उसकावेग अरोकहो अपने प्रबल लहरों के प्रवाहमें लेभीजावे तो उस शुभाशुभ सृष्टि कर्त्ता, माया उत्पन्न कारक ईश्वर के शरणहो उद्धार होने की विधि तथा अन्य कार्योंमें भी ईश्वरका सहारालेते और धैर्यधारण अवलंबनकी उत्तम शिक्षादेती है "भवदेव"

विज्ञापनपत्र ॥

विचित्रचरित्र ॥

तयारहै ! तयारहै ! तयारहै ! अब यह अपूर्वकथा विचित्रचरित्र नामीतयारहै इसपुस्तकमें १४४७ सफेहैं और आदिसे अन्ततक प्रेम-बीर-शृंगार और करुणाआदि अनेकरसोंसे भरेहुए नानाप्रकारके छन्द आख्यानोंसे पूर्ण है मुख्य आशय इसपुस्तकका यह है कि इसभरतखण्ड में एकसमय ऐसा होगयाहै कि उससमय में सर्वत्र म्लेच्छोंकाराज्य होगयाथा और वह म्लेच्छ ऐसे मायावी थे कि दूसरी पृथ्वी दूसरा आकाश दूसरा सूर्य और दूसरा चन्द्रमा मायाबलसे बना देते थे और अपनेको ईश्वर समझते थे और संसारी मनुष्यभी उनको अपनाईश्वरसृष्टिकर्त्ता जानकर उनकी पूजा और उपासना ईश्वरके समान करतेथे निदान ऐसाहोगया था कि उससमयमें संपूर्ण वेदमार्ग संसारसे उठगयेथे और जो सृष्टिकर्त्ता परमेश्वरहै उसका कोई नामभी नहींजानताथा ऐसा कठिनसमय प्राप्तहोनेपर उससमयके महात्माओंने सच्चिदानन्द ईश्वर से उन म्लेच्छों के नाश होनेकी प्रार्थनाकी और उसके अनुसार एक शत्रुंजयनामी बड़ाहरिभक्त राजा उत्पन्नहुआ और उसने सहस्रों वर्ष युद्धकरके सब पृथ्वी के मायावी म्लेच्छों का नाशकरके सन्मार्गको स्थापितकिया यह तो इसपुस्तकका तात्पर्याशय है और इसके अन्तर्गत जो कथा वर्णित हैं वह यहहैं १ मायासेरचेहुए सहस्रोंदेश और पर्वतोंकावर्णन २ सहस्रोंमायाकृत वन बाग उपवन और बाटिकाओंकी शोभाका कथन ३ मायाकृत असंख्यदुर्ग प्रासाद मन्दिर नगर ग्राम और सभाओं की अद्भुत सुन्दरताका आख्यान ४मायाकृत लाखोंनदी सरोवर और समुद्रों की शोभा की कथा ५ सहस्रों मायावी म्लेच्छ और म्लेच्छियोंके मायाकृत स्वरूप और सामर्थ्यका निरूपण ६ शतशः मायाकृत युद्ध होने की कथा ७ नानाप्रकार के मायाकृत अस्त्र शस्त्रोंका वर्णन ८ सहस्रों स्त्री और पुरुषों की नखशिखशोभा और शृंगार

और उनके परस्पर प्रीतिमान् और आसक्त होनेकी कथाओं का कीर्त्तन ९ करोड़ों प्रपंच और छलरचना और बहुरूप धारणकरने की विद्या के द्वारा म्लेच्छोंका बिजयकरना और और नानाप्रकार की सुन्दर शोभायमान और चित्तको प्रसन्न करनेवाली कथाबर्णित हैं और ये उक्तआख्यान यथोचित रससम्बन्धी नानाप्रकारके छन्दों से संपुटित हैं इस पुस्तककी पूरी पूरी प्रशंसा पढ़नेही से जानी जासक्ती है परन्तु हम संक्षेपमात्र इतना कहसक्ते हैं कि स्वस्थताके समय को व्यतीत करनेके लिये और इसके पढ़नेसे चित्तको प्रसन्न और आह्लादित करनेके लिये यहपुस्तक अद्वितीय है और ऐसी अद्भुत है कि हरप्रकारके व्यसनी मनुष्यके लिये उपयोगी है हरभक्त इसको पढ़कर ईश्वरमें दृढ़प्रीति और बिश्वास करेंगे--शूरबीर इसके पाठसे बीररसमें छकितहोजायँगे रसिकोंका चित्त इसकेअवलोकनसे प्रफुल्लित होजायगा बिरहियोंको इसका पाठ प्रिय दर्शनकी समान सूचितहोगा और ईश्वरीय बनस्पति रचनाको अवलोकन काव्यसन रखनेवालों को इसके पाठ में परम प्रीति उत्पन्न होगी॥

इस अपूर्वग्रंथको स्वदेश निवासी महज्जनोंकी प्रीतिके निमित्त श्रीमद् भार्गववंशावतंस श्रीयुत मुंशिनवलकिशोर जी (सी, आई, ई) ने आगरा नगर पीपलमंडीनिवासि चौरासिया गौड़वंशावतंस पंडित कुंजबिहारीलाल उपनाम कुंजलाल से रचनाकराकर अपनेनिज नामांकित यन्त्रालयमें मुद्रित कराया है अब हमको आशाहै कि हमारे भारतदेश निवासी इस मनोहर अपूर्व और अद्भुत ग्रंथको ले लेकर पढ़ें और इसके पाठसे परमानन्द प्राप्तकरके हमको कृतार्थकरें॥

मनेजर नवलकिशोर
प्रेस लखनऊ

+ यहपुस्तक ६१ जुज़ ४ वर्क़कीहै क़ीमत फ़ी जिल्द ३) रु० है परंतु सौदागरों को अथवाओरभी बड़ीतादादके ख़रीदारोंको चाहिये कि दफ़र मतबासे ख़तक़िताबत करें—



अथ वचनतरङ्गिणी ॥

कथा प्रारम्भ ॥

श्रवणगत हुआहै कि समस्त भू विभागान्तरमें एक चन्द्रनगर अतिमनोहरवन, उपवन, वापी, कूप, तड़ागादिसे सुशोभित, सारस, हंस, शुक, पिकादि रमणीयपक्षिगणोंसे मण्डित, देवालय, शिवालय, मनोरंजन हाट, बाट स्वच्छ अनुपमान राजमन्दिर, जिसकी समानता दुर्घट, सैन्य चतुरंग शस्त्रास्त्र सहित सदैव उद्यत, सर्व गुण मण्डित, अखण्ड लक्ष्मी अलंकृत, वीर, सुधीर, राजराजेश्वर महाराज धर्मपाल नाम नृपाल राजसिंहासनपर विराजमान, जिनके दक्षिण ओर शूर समुदाय रणेच्छित बामदिश कार्यकर्त्ता न्यायाधीश, कोषाधिकारी निज २ पदार्पित समाचार निवेदित कररहेहैं। चोपदार महाराज! नजर दोलत! सलामत! पुकार रहेहैं॥ जांगड़ों के अलापंत डंके तड़ंके की चोब वीरोत्साहक लगारहेहैं। छत्र चामर होरहाहै नृत्यकासामा बँधरहाहै इन सम्पूर्ण

सौख्योंके वर्त्तमान में प्रजा बंधु भृत्यगण सहित एक वंशका आभूषण, कुलका दीपक, पुत्रके अभावसे महाराज अत्यंतही शोकग्रसित रहतेथे। तथापि मनइप्सित सिद्धि होनेके अर्थ अनेकयत्न, तंत्र, मंत्रादिकहवन, पूजन, यज्ञादिक नित्य नवीन शुभचिंतकोंके मतानुसार किये जातेथे एक दिवस सुबुद्धि नाम मंत्रीने निवेदन किया कि महाराज के चित्त में जो शोकांकुर वृद्धिपरहै उसको समूलोत्पाटन करने का एक यत्न दास के चित्तमें आया है, आज्ञाहो प्रकाश कियाजावे-तब राजाने कहा, "यथा नामास्तथागुणाः" ईश्वरेच्छानुसार तुम्हारा नाम प्रथम सेही सुबुद्धिहै तो दुर्बुद्धि कहांसे आयेगी। अतः मेरे चित्त को पूर्णरीति से बोध है। तुम निर्भय निवेदनकरो. तब मंत्रीने विनयकी कि हे भूमिपति! यद्यपि आपकी ओरसे उत्तमोत्तम उपचार यज्ञ मंत्रादि सविध होरहे हैं तथापि मेरी लघुमति में यह भी आया है कि नित्यशः रात्रि को आप द्वितीय भेष धारणकरके नगराटन किया करें उस में जो पथिक, क्षुधार्थी, तृषार्ति, अंध, बधिर पंगु, वस्त्रहीन, दरिद्री उपस्थित हों, उनका शोधन कर अवश्य उनकी व्यथा निवारण कीजिये, क्योंकि ऐसे पुरुष सुखपातेही अंतःकरणसे पूर्ण आशीर्वाद देते हैं. जिसको जगत्कर्त्ता ग्रहण करताहै और दाताको मनोरथ सिद्धि देता हैं॥

इस वार्त्ताको श्रवणकर भूपति सहर्ष मंत्री के संमति की प्रशंसा कर वैसाही करनेको उपस्थितहुआ। और नित्यशः साधु, महात्मा, दीन, दुखी पुरुषोंकी सेवा पूर्ण

रीतिसे करने लगा. किंचित् काल पश्चात् राजपत्नी सगर्भ हुई और दश मास व्यतीत होने पर पुत्र रत्न पूर्ण चंद्राकृति उत्पन्न हुआ। अचांचक दासी के मुखसे पुत्रोत्सव श्रवण करतेही महाराज सभा सहित आनंदांबुधि में निमग्नहुए और शीघ्रही दानार्णवने प्रवाहलिया, जिससे यश रूपी सरिता उमड़कर दशों दिशाओं को प्रचलित हुई। नौबत नगारों के शब्द होने लगे। भेरी सहनाई में बधाईकी गवाई हुई। चौघड़ोंमें ध्रुपद, धमार, धीमा, जलद, तिताले के ठेका धुकनेलगे। तोपों बंदूकोंके अर्राटे में कोई किसीकी नहीं सुनताथा प्रजागण बधाई ले भूप द्वारपर भीर करते। पुरस्त्री विचित्र वस्त्र, आभूषण धारणकर मंगलीक दधि दूर्वा ले प्रवेश करतीं। भाट, भाँड़, वेश्यादि गान करतीं। इतने में पंडित ज्योतिषियों की समाज एकत्र हुई। लग्नका निश्चयकर, कुण्डली रख ग्रह, नक्षत्र, तिथि आदिका फलाफल सोचकर विनयकी. महाराजकी दीर्घायुहो! चिरंजीव चिरायुहो! सम्पूर्ण महाशयों के विचार में कुंडली का फल परम उत्तम है! राज्य योग पूर्ण है! समस्त शत्रु चूर्णहै! मात पिताको शुभकारीहै! मित्रोंका शोक हारी है! स्त्रियोंसे सुख है! दया इसके चित्तमें मुख्यहै! कोष इसका कुबेर हो! लाभका ढेरहो! अरिष्ट भंगहो! सुन्दर सत्संगहो! अचल राज्यकरे! दीनों पर उपकार करे! सन्मार्ग में द्रव्य लुटावे। मुल्कों में नाम उठावे॥ परंतु कुछ क्रूर ग्रहोंकी दृष्टादृष्टिसे यहभी निश्चयहुआहै कि कोई श्यामवर्ण पक्षीका समागमहो, राजपत्नीसे वाद

हो, राज्यका त्यागहो, वन पर्यटनहो, मित्रसे विक्षेप हो, मार्ग में बंधन हो, निर्विघ्न निवारणहो, मार्गसुगमहो, स्त्री समागमहो, पश्चात् इच्छित स्थान प्राप्तहो, मनोरथ सिद्ध हो, दो शशि बदनी सहित लौट आवे, बीच में बिछुरा मित्र मिलजावे, उसके द्वारा क्लेश उठावे, अंतमें सुख पावे, जल भयको बितावे, मातापिताको हुलसावे, आनंदसे दिन बितावे, फिर कुछ भय नहीं सतावे, । इन वाक्यों को श्रवण कर नरपति दान दक्षिणा दे कहने लगा दुःख सुख सब मनुष्योंही को होते हैं, प्रारब्ध अमिट है, तथापि जीव जोखम नहीं है तो इस में भी सत्कीर्त्ति चिरस्थायी है, किंचित्भी शंकामाननेका अवसर नहीं है, फिर वंदियोंको मुक्तकर, किसानोंकीकर माफकर, भृत्यगणों को एक वर्ष का वेतनदे, आज्ञा की कि गृह २ सब्रप्रजा सालभर नृत्यवाद्य देखे जो अशक्ति हो राज्य कोषसे ले, इस प्रकार प्रबंधकर राजपुत्र के प्रतिपालका यत्नकर, सहर्ष नामकरणादि कर्मकर, चंद्रकांति नाम स्थापित कर, नितप्रति बालक की कांति वर्धित देख अत्यानंद पातेरहे समयांतर कौमार अवस्था अवलोकनकर विवाहका चिंतवन कर उत्तम राजकुलकी हर्षावती कन्यासे राजपुत्रका सम्बंध किया। सबधु पुत्र देख दुःख बितादिया। चंद्रकांति और हर्षावती समोद बिहार करने लगे॥

दूसरी कथा ॥

हर्षावतीसे मैनाका वाद राजपुत्रका वनोवास ॥

दोहा। सुख पीछे दुख होत है दुख पीछे सुख होय।
भाग्य जो दई सो दई सई ताहि न मेटेकोय ॥

इस समय पर्यंत लेखनी राज्य सौख्यकी कथा लेख में निमग्न रही अब समयका फेर फार आकाशके चक्र का वर्णन करने को उद्यत हुई ॥

दोहा। चलती चक्की देखकर दिया कबीरा रोय।
दो पाटों के बीचआ सावत बचा न कोय ॥

अहा! हा! दैवेच्छा अत्यंतही प्रबल होतीहै, अद्भुत कालका क्या अक्षय नियम हैं कि "सुखांत दुःख, और दुःखांत सौख्य" विधिने निर्मित कियाहै! अवलोकन करनेयोग्यहै, कि कहांतो राजपुत्र और राजकन्या सानंद मात पिताके वर्त्तमान में निर्भय सुख भोगरहेथे। कहां अब पूर्व वर्णित वाक्यके निश्चय होनेका समय प्राप्त हुआ। अर्थात् एक दिवस मासांतके स्नानकर, पवित्र हो वस्त्राभूषणसे शृंगारकर, सहर्ष सिंहासनपर हर्षावती विराजमानहो आदर्शकमें स्वमुख अवलोकनकर राज मैना जो स्वर्णके पिंजरेमें परम प्रीतिसे प्रतिपालितथी-बोली कि ऐ मैना तूने भी अमित राज्यस्थान स्वाधीनत्व व पराधीनत्व व रासीनत्व में अवलोकन किये हैं, इस हेतु तुमसे प्रश्न है कि इस समय जैसी मेरी कांति दीप्तिमान् है तत्तुल्य किसी अन्य राज्यस्थान में द्वितीय राजकन्या तेरे दृष्टिगोचर हुईहै अथवा नहीं?

सत्य सत्य निवेदन",, कर तब मैना ने उत्तर दिया कि क्या आश्चर्य है कि तुम्हारेही वाक्य सत्यहों हम पक्षीगण नित्य नवीन अन्न जल के ग्रहण करता इसका उत्तर नहीं दे सक्के। तब हर्षावती ने कहा कि महाराज ने तुम्हारे सुरस संभाषण परही लक्षमुद्रा विक्रय कर्त्ता को न्यौछावर दे राजपुत्रको अर्पित की। और अद्यावधि तुमनेभी अनेक देशांतरीय कथा, विभाग तथा राज्यकुलोंके वर्णन से राजपुत्र का चित्त प्रसन्न किया! आज क्या कारण जो हमारी प्रश्नका उत्तर दंत दबाय, मुख चबाय दिया.जिससे मेरा चित्त सखेद है। इस हेतु तू इसे अपने सुवाक्य से शीघ्रही निवारण कर। तब मैना ने फिर उत्तर दिया कि काल बली है! हम से वादानुवाद में भलाई नहीं! जिस सत्य भाषण में क्लेश हो उससे असत्य भाषणमें दोष नहीं. आप अपनेही चित्तसे प्रश्नोत्तर करो, हमपर कृपा करो, तब तो राजकन्या क्रोधित हो बोली "जैसा तेरा बाह्यरंग श्याम है" वैसा अंतःकरण भी श्याम है,, तूने अपने वाक्यों से मुझे तुच्छ करदिया। अब अपनेको किंचित्काल और सजीव रखना स्वीकृत हो तो सत्य २ कहो? तब मैना भी सक्रोध बोली कि॥

चौ०॥ गर्व न कीजे राजकुमारी। जगकर्त्ता है गर्वाहारी॥

इस संसार को जिस ईश्वर ने निर्मित किया है उसकी रचना अलौकिक है। उसने क्रमशः एकसे एक स्वरूपवान् स्त्री पुरुष उत्पन्न किये हैं. जिनके चरण कमलकी सादृश्यता तुम्हारा मुख नहीं करसक्ता। फिर

हे राजपत्नि तुम अपने को अद्वितीय न समझें; और ऐसेसार्ख वचन मुझ पक्षीसे न कहें, कारण कि मुझे अपने सजीव रहने न रहनेकी भय नहीं, किन्तु राजपुत्र के सुख भंग होनेकी भयहै-- अतएव आप मुझ से उत्तर प्रतिउत्तर करने से अवाच्यहों॥ तब तो राजपुत्री महान् क्रोधितहो, मैना के पिंजरे को उतार मारने को उद्यत हो बोली "मैना सत्यकह नहीं तो अबतेरा दूसरा अवतार होनेको विलंब नहींहै? मैना ने उत्तर दिया जिस नारायणने वन वन में मेरी रक्षाकी है क्या; वह इस राजभवनमें स्वप्तहै,, अथवा उसे कुछ तुम्हारा भय है जो हमारी रक्षा नहीं करसक्ता। आप निर्भय अपना मनोरथ पूर्ण करें, मुझे कुछ भय न दिखावें मैं निर्भय हूं॥ इतने में राजपुत्र जो अगोचर इस बादानुवाद को आद्योपांत श्रवण करता था मैना का मृत्यु समय जान शीघ्रही प्रकट हुवा; और राजकन्या के हाथ से मैनाका पिंजरा ले बोला हे मैना अब तुम निर्भय हो सत्य २ निवेदन करो, तब मैना ने कहा महाराज मुझे हर्षावती का सगर्व वाक्य सहन नहीं हुवा इससे मैंने ऐसा भाषण किया, आप राजपुरुष सज्ञानहैं आपको पक्षियों के वचन का विश्वास योग्य नहीं परन्तु राजपुत्र के मन में प्रथम की वार्त्ता स्थिर होगई थी इस कारण मैना को उत्तर दिया कि मैंने जो प्रीति तेरेसाथ सुरस संभाषण के कारणकी है उसे तू उत्तम प्रकार से जानती है और आज पर्यन्त मैंने तेरेहीमति का अवलंब लियाहै फिर अब इसवार्त्ताको तू किसहेतु

गोप्य करती है, मुझे पूर्ण निश्चय है कि यह सृष्टि अतर्क्य है वह सर्वशक्तिमान् भगवान् क्या नहीं करसक्ता है उसीने जो मेरे प्रारब्धमें लिखाहोगा वह अमिटहै॥

श्लोक॥ उदयतियदिभानुःपश्चिमेदिग्विभागे।
प्रचलतियदिमेरुःशीततांयातिवह्निः॥
विकसतियदिपद्मंपर्वताग्रेशिलायां।
नहिचलतिनराणांभाविनीकर्मरेखा॥

फिर क्या तू शंकरहै यथा " भावीमेटिसकहिं त्रिपुरारी" जो भावी मेटदेगी, इससे अब असत्य भाषण का दोष निवारणकर, निष्केवल सत्यकहो, यदि राजपुत्रीका कुछ भयहो तो वह अब मेरेसन्मुख असमर्थ है और अब तुझे उसके स्वाधीन नहीं रहनाहै फिर क्या भयहै? तब मैनाबोली महाराज! आपकेसन्मुख कौन ऐसा बलीहै जो मुझपर कुदृष्टिकरे! परन्तु मैंने हर्षावतीसे जो वाक्यकहेहैं वह उसीके शुभचिंतक के हेतुहैं, कारण कि उसे निजस्वरूपका गर्वहुवा औरगर्व से मानभंग होताहै। इससे उत्तम पुरुषोंको सगर्व वचन उच्चारण उचित नहींहै। फिर हम और राजपत्नि स्त्री जातिहैं और स्त्रियोंका स्वभावही होताहै कि उन्हें परस्पर विरोध और प्रीति करते कुछ विलंब नहीं लगता, अतएव आप राजपुत्रनीतिज्ञहैं, आपको इसवार्त्ता पर चित्तलगाना अनुचितहै, मेरा अपराध क्षमाकरें। इसप्रकार मैनाने राजपुत्रका बोधकिया, परन्तु यत्न व्यर्थहुवा॥ चंद्रकांतिने निश्चय उत्तरदिया कि यदि तू स्पष्ट सत्य २ नहीं कहती और ऐसेही मूर्खप्रबोधक

वार्त्ताकरेगी तो तुझे तो मैं बंधनसे मोक्ष करूंगा और मैं नित्य नवीन सृष्टि अवलोकन करते करते कोई बनबाटिका में मरूंगा; चौ० ॥ लोचनओट बैठमुख गोई । जा इहांसे ! इतना कह शीतल सांसले यहकवित्त पढ़ा =

क० ॥ अदिनपरेते द्रव्य संचित अलोपहोत अदिनपरेते राज राजन रहै नहीं। अदिनपरेते भीम भीषमसे परास्तहोत, अदिन परेते वीर विक्रम रहे नहीं. ॥ अदिन परेते विपरीत कालहोय जात भनत भवदेवमित्र एको रहेनहीं, । अदिन परेते धीर धीरन घटी कछरे. अदिनपरेते नीर नदी न रहै नहीं ॥

और कहा मैना तुझे कुछ दोष नहीं यहसब मेरेही प्रारब्ध बली ने तुझसे और राजकन्यासें वादानुवाद कराय, मुझे सुनाय, तुमसे मठागोंठली कहाय, मेरेचित्त में अग्नि भड़काय, इसदशा को पहुँचायाहै । मैना ने राजकुमारकी अधिक व्याकुलतादेख चित्तमें निश्चय किया कि अब यह सिवाय सत्य कहनेके न मानेगा, नजाने किसओर भटकेगा, क्लेश सहेगा मुझपर स्वामि दोष पड़ेगा. अब अधिक गोप करने में अनर्थहै यह पर्यटन करनेको समर्थहै, और उपायव्यर्थहै, तबविनय की कि महाराज ! यदि आपने अपने चित्तमें ऐसाही निश्चय करलियाहै, तो प्रथम मुझे यह वाक्यदान दीजिये, कि तेराही कहना करेंगे तोमैं प्रकाशितकरूं,, राजकुमारने सहर्ष कहा स्वीकृतहै जैसातूकहेगी करेंगे,, तब उसने कहा राजस्थानसे उत्तरकी ओर कुछ न्यूनाधिक सहस्रकोसपर हेममेदनी नाम नगर अत्यंत उत्तम बन

बागादिसे सुशोभित, कंचनभूमि, रत्नजटित राजमंदिर, अनेक जलाशय सहित सुखपालनाम राजासे रक्षित है जिसके असंख्य सैन्य चतुरंगहैं॥ उसीके एककन्या शशिमुखी, स्वर्णगात नेत्र खंजन, पिकबैनी, गजगामनी, कदलिजंघा, कटि केहरि रतिप्रभानाम सहस्रावधि सुन्दर दासियों से लालित अधिक स्नेह सहित प्रतिपालित अवर्णीय है यथा—

क०॥ जाकीही सुवासे सुवासित बहुयोजन माहिं, जाकीही सदृश जातरूप न लखात है। जाकीही तुल्य काम वाम न कहत बने, जाकीही प्रभाते प्रभा चन्दकी लजातहै,॥ जाकीही कांति मणि कांतिनको दूनीकरे भनत भवदेवसुकबि बर्णत सकातहै,। रंभासी रतिसी देव किन्नर सुतासी, यह हावभाव संयुत सुलोचना विभात है॥ चंलत सुमन्द गजगमन रतनभूमि करत अनन्द बन बागन बितानन में,। फैलत सुगन्ध तन घेरत भ्रमर भीर यहरे सुछीर बस्त्र भूषणसुअंग आनन में॥ ललित सुवाक्य मृदुबोलत भव देव भने मोहत नरनार सुनजाके सुवानन में,। कानन में जरत फूल हाथन में हस्त फूल पांयन में पायल नथ पहिरे कमलानन में॥

और उपमा उसकी कहांतक बर्णनकरूं, यदि उसकी दासियों को हर्षावती अवलोकनकरे तो निश्चय है कि लज्जासे एक गंभीर जलार्णव में निमग्नहो बतासे का बिष भक्षणकरे, फिर न कभीगर्वकरे. लेव आपकी आज्ञा पूर्णहुई। अब स्वस्थहूजिये! राज काजपर चित्तदीजिये! मेरी बिनय मान लीजिये! इतना सुनतेही चन्द्रकान्त के हृदय में उसराजपुत्री के दर्शनों का वृक्ष अंकुरितहुआ, बिरहाग्नि प्रचंडहुई, श्वासोंकी धाराअ-

खंडहुई,, हाय रतिप्रभा चिल्लापरआई, मूर्च्छितहो गिर-पड़ा, कफगलेमें आकर अड़ा ! चित्तप्राणप्रियाके चित्र में गड़ा ! फिर लुड़खड़ाकर बोला !

दोहा। दीजे दर्शन प्राण प्रिय, कीजे हृदय सनाथ।
लीजे यश संसार में, लखकें मोहिं अनाथ॥

हे मैना अबशीघ्रही प्राणप्रियाके नगरकी मार्गबत-ला,। बाट के लघु दीर्घस्थान चतला ,। बातों में मत फुसला ! यदि मेरा जीवन तुझे स्वीकृतहो तो शीघ्रही प्राणरक्षाका यत्नकर मैना घबराई, तनकी सुधिबिसराई, क्रोधको धिक्कारदै, आयो आपसे कहनेलगी। हाय! मैंने हर्षावतीके सगर्व बचनोंपर क्रोधकिया। राजपुत्रकोक्लेश दिया,यह अपूर्व यशलिया यदि कहदेती कि तेरे समान त्रैलोक्यमें कोई नहीं है तो यहअवसर दृष्टिगोचर न हो-ता। वादानुवाद होकर यह परिणाम न होता ! मेरा बद-नाम न होता!हाय ! मैंने बहुतही नीच निंदित कामकिया। सँभलकर हर्षावती से बोली कहोजी आपका गर्वकहां है ? राजपुत्रकी यहदशा है, बिपत्ति महाहै, कुछ बिचार किया अथवा नहीं ॥ फिर राजपुत्र से कहनेलगी. महा-राज ! अदृश्य प्रीति में आपकी यह दशाहै, तो प्रत्यक्ष की क्या कथा है। किसप्रकार मार्ग व्यतीत करोगे ? अनेकक्लेश सहोगे ? हृदयमें धीरधरोगे ? किंचित् स्व-स्थहूजिये ! मेरीबातपर ध्यानदीजिये स्वमाता पिताकी अवस्थापर दृष्टिकीजिये ! हमवादी प्रतिवादी हैं हमें धर्म का विचारकहां ! यथा "वादीधर्मोनपश्यति" इसमिथ्या-भाषणके परिहार में मुझेबधका दंडदीजिये; आपराज्य

कीजिये,; परन्तु चन्द्रकांत को बोध न हुआ, प्रतिउत्तर का दाताहुआ, कहा रे मैना अवयत्न वृथा है तेरेबदले में असत्यभाषण का दंडलेनेको उद्यतहूं, तुझे मुक्तकर ने को आनन्दितहूं, मैंने अपने जीवसे हस्त शुद्धकिये, माता पिता ईश्वरको सौंपदियें, सम्पूर्ण क्लेश मानोआ-जहीसहलिये, यदि सजीवरहे तो ईश्वरेच्छानुसार मनोरथपूर्णकर राज्यकरेंगे, नहीं तो मित्र बिलापका स्मरण करते२ कहींमरेंगे लौटने को बदन धरेंगे " यथा "

क०॥ कौन घरी करहै विधना, जवरुईयां आंदिलदार मुबीनम। आनँद होय तबै सजनी, दर मुहबत यारनिगार नशीनम॥ प्राण प्यारी मिले जबहीं दरबागे वस्ल गुलेश विचीनम। सूरत मित्र की चित्त बसी, कबि गंगकहैं चूं नक्श नगीनम॥

मैनाको निश्चय हुआ कि राजपुत्र के काम बाण बेधित हुआ, यत्न सब व्यर्थहुआ,सुखका अन्तहुआ, बिपत्तिका संगहुआ; अब सिवाय मार्गी होनेके उपायनहीं, आवच्य रहने का अवसर नहीं, ईश्वरेच्छा बलवान् है, चलने का सामान है,, बोली हेराजपुत्र यदि ऐसाही निश्चय है, जो ईश्वरको सहाय कीजे, मुझे मुक्तकर साथ लीजे, कारण कि हमको आकाश मार्ग चलनेसे पंथका ज्ञान होताहै, परन्तु मार्गमें कईस्थान माया रचित मिलतेहैं वहां यदि आप मेरा कहना न करोगे, बिपत्ति में पड़ोगे, दुःख सहोगे, भाग्यसे लड़ोगे, हमसे बिछुरोगे॥ राजपुत्रने यह बाक्य स्वीकृत किया, चलनेमें चित्तदिया, राज्यसे मुख मोड़लिया, सुखसे दिल तोड़दिया, चलने को शीघ्रही उठ खड़ाहुआ; तब मैना बोली इतनी

शीघ्रता न करो, किञ्चित् धैर्य धारण करो, आज गमन का समय नहीं. रात्रि यहीं ब्यतीत करो, मित्रोंसे वार्ता करो प्रातःकाल पयान करेंगे भाग्य से लड़ेंगे, यत्नों का कोष खोलेंगे, मनोरथ सिद्धकर लौटेंगे; इतनेमें राजपुत्रका मित्र मन्त्रीका पुत्र प्राप्तहुआ, उसको यह समाचारज्ञातहुआ वहभी चलनेको सिद्धहुआ जिससे राजपुत्रको अत्यन्तही हर्षहुआ, उसीके बिचारमें रात्रि ब्यतीत की, प्रातःकाल चलने की बात चींतकी ॥ अरुणोदय होतेही दो अश्व शीघ्रगामी मँगाये, उत्तम जीन लगाये. प्रातः क्रिया कर दान दे आशीर्वाद ले, ईश्वरका स्मरणकर घोड़ों पर सवार हुए चलनेपर चित्तदिये. उत्तरको मुखकिया मैना का पिंजरा हाथमें लिया, अंतःकरणसे माता पिताको नमस्कार किया, राज्य भवनको अवलोकनकर चलदिया ॥

तीसरी कथा ॥

"मैनासहित राजपुत्र और मन्त्रीके पुत्रका गमन. माया में,, फँसना, मित्रोंका, बिछुरना फिर मायासे निकलना"

दोहा। बिपति बराबर सुख नहीं जो थोरेदिन होय।
इष्ट मित्र बन्धू जिते चीन्ह परै सब कोय॥

अब लेखनी को कुछ बिपत्ति वार्ता बर्णन करने की आवश्यकता है, सुख वार्ताकी अदृश्यता है, निदान मंत्रीका पुत्र जिसका नाम सुमित्रथा उस सहित राजपुत्र मैनाको ले, नगरके बाहर जा, ईश्वरका स्मरणकर, मैना को पिंजरेसे मोक्षकर बोला हे पक्षी तू मुक्तहुआ, मैं बियोगमें ग्रस्तहुआ, अब तू स्वाधीनतासे गमनकर, मेरा

सुकार्य चित्तमें धर, मैं पराधीन हूं, मार्ग से अज्ञात हूं. इतना कह जिस ओरको मैना उड़चली दोनों बीर उसी ओरको चले नवीन अन्न जल ग्रहण करते, सँभलकर पग धरते. बियोग की श्वासें भरते, मैनासे मार्ग श्रम निवारणके हेतु अनेक कथा सुनते, शीघ्र चलतेथे, रात्रि को सुथल देख निवास करते सूर्योदय से गमन करते भावीवश किञ्चित् काल पश्चात् एक माया स्थान में प्राप्तहुए; रमणीय भूमि देख चित्त प्रसन्न हुआ. वहांके बिलासको उत्सुकहो सुमित्र से बोला हे मित्र यहकैसी उत्तम भूमिहै हरित तृणसे संकुलितहैं,सफल वृक्षहैं,मनोहर पक्षी हैं इतनेमें दोमृग अति मनोरम जटित आभूषण,पहरे तीनखावकी भूलें पड़ी दृष्टिगोचरहुए,राजपुत्र उनकी गतिदेख मोहित हुए, निर्भय मन्द२ गतिसे चलेआते थे अपनी गोरवतासे सबको लजाते थे, चक्रकान्तने सुमित्रसे मन्त्रकिया, उन्हें पकड़ने में चित्त दिया. अश्व चञ्चल किया यह देख मैना ने बिलाप किया अत्यन्त उच्चस्वरसे कहा राजपुत्र यह क्याकरते हो मेरे कहनेपर ध्यान नहीं धरतेहो इन्हें देख हँसतेहो आपही बिपत्तिमें फँसतेहो, यह सब मायाका प्रपञ्च है, दीर्घ दृष्टिका अवसरहै किंचित् बिचार कीजिये. इसपर दृष्टि दीजिये, कैसा यह बनहै. कैसे ये मृगहैं ऐसाप्रसंग "भूतो न भविष्यति" इसप्रकार बहुतसे उपदेश किये यत्न सब नष्टहुए भावीबश राजपुत्र मैनाके बचन श्रवण करनेसे बधिर हुआ, मृगके पीछे मार्गीहुआ. मैना ने शिर पटका, चित्त राजपुत्रमें अटका, हृदयमें हुआ

खटका. कि जब यह क्लेशमेंलटका बहुतसी दौड़ी. हाथ न लगी कौड़ी. एक वृक्षपर बैठरोदन करनेलगी, दिन रैनजगी राजपुत्रके शोधको चहुँओर भगी, किसी ने न कहा कि इसओर गये हैं॥

दोहा। तुलसी जस भवतव्यता तैसी मिले सहाय।
कै ले आवे ताह कों ताह तहां ले जाय॥

मृग राजपुत्र को अपने पीछे अवलोकन कर चतु श्रवण होतेथे चञ्चलता से अश्वोंसे अधिक उड़ान भरते थे. निज स्थानका ध्यान धरतेथे शीघ्र २ भगते थे इसपर भी जब राजपुत्रोंसे बियोग होता दृष्टि नहीं हुआ दोनों ओर दोनों मृग मार्गीहुए. एकओर चन्द्र-क्रान्त गया एक ओर सुमित्रगया, परस्परका समागम गया संगका सहाईगया अकस्मात् राजपुत्रके सन्मुख से मृग अदृश्य हुआ सुमित्र से बियोग हुआ मार्ग से अज्ञात हुआ मैनासे विक्षेपहुआ अश्रुवों का प्रवाह हुआ चारोंओर दृष्टिकी। मार्गकी सुधिकी! पर सिवाय अक्षयबनके कुछ नहींदेखा भावीका वशलेखा रतिप्रभा का स्मरणकिया उसीके ध्यानमें चित्त दिया हरिहरकह एकओर का मार्ग लिया थोड़ीदूरपर एकवाटिकामिली उसमें प्रवेश किया स्वच्छ जलाशय अवलोकनकर अश्वसे उतर—तृषार्तिसे हस्तमुख प्रक्षालनकर जलका पानकर तांबूल भक्षणकर मित्रका ध्यानधर कहा॥

दोहा। मात पिता के सुखतजे तजे राज अरु काज।
रतिप्रभा के कारणे बिपतिलई शिर आज॥
प्यारी वेगहिं दरशदे भई अधिक उर पीर।
कहाकरों कासों कहों हृदय धरत नहिं धीर॥

इतने में क्या चमत्कार देखा कि एक अत्यन्त सुन्दरी नवयोवना चन्द्रसा मुख भ्रमर समूह से केश शुक तुण्डसी नासिका विद्रुम से अधर कमल से नयन मंद२ मुसक्याती बार २ पानखाती जल अभ्यंतर से राजपुत्र की ओर आती राजपुत्र ने दृष्टिकी मन में बिचारलिया कार्यसिद्ध जानलिया प्रतीतहुई कि मेरा श्रम देख करुणामयको करुणाआई रतिप्रभाको इहां बुलाई मुझसे मिलाई इतने में वह नवयोवन खोल मुख से यहबोली कि हे राजपुत्र चन्द्रक्रांत.तेरेहेतु मैंनेबहुत क्लेशसहे अश्रुवों के नालेबहे.आज यह योगहुआ,तेरा दर्शनहुआ अब शीघ्रताकर,बिलम्बका अवसर नहीं, यह तो आसक्तथा रतिप्रभाके नामपर मोहितथा किंचित्‌ही विचार न किया कि कहां वहराजपुत्री और कहांयह जलाशय, अधैर्यहो शस्त्रास्त्र त्याग जीव की आशातोड़ अश्व से मुखमोड़ जलाशयमें कूदपड़ा उलट पुलट होते२ स्थलपर पांवजमा ! चित्तजमा ! चक्षु खोले आपही बोले॥

दोहा। इहि सर डुबकी हमलई प्यारी करहि न लाग।
करता को कह दोष है बुरे हमारे भाग ॥

फिर उत्तमरीति से देखा तो न घोड़ा है न जोड़ा है न वह जंगल थोड़ा है न वह जलाशय है न वह महाशय है सिवाय सघन बन के कुछ दृष्टि नहीं आता तब तो हियहार मनमार एकओर को गमन किया. प्रारब्ध पर चित्त दिया हरिहर का नाम लिया आगे चल क्या अवलोकन किया कि एक स्वर्ण का कोट है! उपबन की ओट है त्रिविधसमीर आरही है बसन्तऋतु लजा

रही है मार्ग स्वच्छ है मनोहर वृक्ष है फुहारोंका प्रवाह है गानके शब्दकी वाह वाहहै यहअशंक प्रवेशितहुआ बाटिका विहात हुआ फल इसे अवलोकन कर हँसने लगे उछल २ कर गिरने लगे फिर नवीन होने लगे राजपुत्र ने यह देख आश्चर्य जाना हृदय में हारमाना अपने को बिपत्ति में फँसाजाना मैनाकीबात यादआई, शिक्षा चित्त में समाई उससमय कुछ न बनआई, नेत्र मूंदलिये हरिके चरणों में चित्तदिये एक सघन वृक्ष के नीचे जलाशय के किनारे बैठगया यत्न से हारगया. अकस्मात् एक रूपवती दासी आई उस ने यहवार्त्ता सुनाई! कि हमारी महारानी आप.का स्मरण करती हैं आप के मिलाप की आशा करती हैं वियोग से श्वासें भरती हैं शीघ्रही गमनकीजे समागम से सुखदीजे यह अपूर्व यशलीजे चन्द्रकांत ने आंखखोली. ईश्वरेच्छा से मतिडोली! हृदय में चिन्तवन किया कि देखें अब कौनसी भावी आगे आती है,मृत्यु किस स्थानपर लियेजाती है, क्या आश्चर्य दिखाती है, नारायण को क्या भाती है॥

दोहा। मेरे मन कछु और थी करता के कछु और।
मेरी ठाटी ना ठटी प्रभु ठाटी सो ठौर॥

पुनर्यथा॥

चौ०। जाकर जापर सत्य सनेहू। सो तिहिमिले न कछु सन्देहू॥

यदि यह प्रमाण सत्य है तो समयान्तर में राजकुमारी मुझे अवश्य प्राप्तहोगी, बिपत्ति सब दूरहोगी,विरहाग्नि शांति होगी, फिर परमधैर्य्यता से सिंह समान

उसका साथलिया स्वकार्य साधन में चित्तदिया ॥ यथा ॥
श्लोक। स्वकार्यंसाधयेद्धीमान् कार्यभ्रंशोहिमूर्खता ॥
आगेबढ़ राजमन्दिर में प्रवेश करतेही वहां की सुगन्धि से चित्त प्रसन्नहुआ राजपुत्री की सभा अवलोकनकर यह कवित्त स्मरण हुआ ॥
क०। गुल गुली गिलमें गलीचा हैं, गुनीजन हैं चिके हैं चिरागे हैं चिरागन की माला हैं। भनै पद्माकर यों गजक् गजा हैं सजी सेजें औ सुराही औ सुराहैं अरु प्यालाहैं॥ शिशिरके शीत के न ब्यापत कसाला जिने तिनके हवाला येते उद्यत मसाला हैं। तान तुक ताला हैं विनोद के रसाला हैं सुबालाहैं विशाला हैं दुशाला चित्रशालाहैं॥
परंतु राजपुत्र सधैर्य गौरवतासे आगे चला वहांके विचित्रतासे नेक न हिला। राजपुत्री को राजसिंहासन पर अवलोकन कर निर्भय समीप अर्धासनपर शोभित हुआ, राजपुत्री के हृदयमें प्रेमार्णवका प्रवाह हुआ चित्त उसी में मग्न हुआ मूर्छा आगई स्नेह में समागई। फिर अपने को सँभाल, स्वस्थतासे बैठाल बाचालहुई कि कहिये! आपका आगमन कहां से है? गवनेच्छा कहांकी है? आपका नाम क्याहै? इहां काम क्या है? आप परम निर्भयहो जो इहां बैठनेकी कुछ शङ्का न की मेरे तुल्यताकी समानताकी॥ तब तो राजपुत्रने प्रसन्नतासे उत्तर दिया. उसको पराधीन जानलिया सत्य २ कहा मेरा चन्द्रकांत नामहै. चन्द्रनगर ठामहै, रतिप्रभा की प्रीतिने सतायाहै, मुझे अपनोंसे बिछुरायाहै, काल बली इहांतक लायाहै आपके समीप पहुँचायाहै. अब हम पर दया कीजे. सपिता अपना नाम लीजे. इहां के

आश्चर्योंसे जतादीजे, मुझपर यह उपकारकीजे ॥ रति-
प्रभाका नाम सुनतेही हृदयमें हारगई, जानगई कि उस
पर राजपुत्र आशक है हँसकर बोली मुंदी चोंच खोली
"मैं विक्रताननकी कन्या" हूँ रूप यौवनमें धन्याहूँ' नाम
मेरा महारेखाहै तेरी ओरं आज देखाहै मैंने एक दिवस
पितासे प्रसन्न देख कहा कि अबमेरे बिवाहका चिंतवन
कीजे यह सुन क्रोधितही यह मायाका स्थानरच, इसमें
मुझे रख आज्ञादी कि तू यहां अपना पति मिलालेना,
तबसे मैं यहां रहतीहूं, तेरी सुन्दरता देख आसक्त हूं. मैं
अपनेसे पराधीन हूं, तेरेस्वाधीन हूं, यह सुन राजपुत्र
ने शीतल श्वासली निश्चय जान्ली कि यह मायावी
की बेटी है, कामाग्नि की आखेटी है. मुसकराय कर बो-
ला, 'क्या अच्छी बात है' कैसी यह घात है. आपनेमेरी
राह खोटी की "अपनी चाह मोटी की" मैं राजपुत्र हूं
रतिप्रभा के प्रेमका सताया हूं, मेरी एक आन है उसी
का मुझे ध्यान है' और से ग्लानहै अब मुझे पूर्वस्था-
नपर पहुँचादे अपने कार्यमें चित्तदे? तेरी प्रारब्धसे और
कोई बर्णसंकर राजपुत्र आजायगा तेरी मायामें फँस
जायगा यहीं अपना जीवन बितायगा। इतना श्रवण
करतेही प्रज्वलित अग्नि के तुल्य क्रोधित हुई. कामा-
ग्नि से बेधित हुई. राजपुत्रसे रक्त नेत्रकर बोली! आप
अपने वचनके सच्चेहो? देव गन्धर्वके बच्चेहो! पर मनु-
ष्य है इतनीही तेरी आयुष्य है कहांकी वह राजपुत्री
कहांका तू राजपुत्र! मेरी ओर ध्यानदे मेरा यह कौतुक
देखले मैं अपने मायाके पराक्रम से रतिप्रभा को वहां

से उड़ाती हूं. तेरे सन्मुख इहां लाती हूं. सप्रेम उसेभक्षण करती हूं. तेरा हृदय आनंद से भरती हूं फिर तेरे भाग्यमें हो सो हो ॥ इतना श्रवण करतेही चन्द्रक्रांत नेत्रोंसे अंधहुआ, करणोंसे बधिर हुआ, सजीव प्राणगत हुआ. फिर नारायण का ध्यान लगा चित्तमें बिचार किया कि इहां सत्य का नाम नहीं, धर्मका काम नहीं, अपना कोई मित्रनहीं भगनेको मार्गनहीं, अपने को माया यादनहीं, यह राक्षसी है इसके चित्तमें यही बसी है कि प्रत्युत्तर करतेही स्वभाषित सिद्ध करेगी उसके रक्तसे स्नान करेगी इससे अब शीघ्रता का काम नहीं जिस ईश्वरने इहां फँसाया हैं परबश रुलाया है क्या फिर वह उबेलनेसे असमर्थ है ? किन्तु परम समर्थ है अब सधैर्यही यत्न सोचनेका कामहै,, नहीं तो मृत्युका प्रस्थान है फिर अंतःकरणसे रुदितहो बाह्य से प्रफुल्लितहो बोला वाहजी आप हास्यमें अप्रसन्नहुई रतिप्रभा का नाम श्रवण करतेही मुयी। यह न बिचार किया कहां मैं ! कहां वह ! फिर वर्त्तमानमें तुमसीबाला, अग्निकीसी ज्वाला, जिससेहो सबका मुखकाला। छोड़ क्या मैं ऐसा अबोध हूं जो अदृश्य पदार्थ के हेतु बन२ भटकूं नीच ऊंचमें अटकूं ऐसा कह उसे अंकमें भरलिया चित्तसे उसका श्याम बदन किया, अश्रुबहादिया, उसे शीतल करादिया ॥ तब तो वह प्रसन्न हुई गलेसे लिपट गई, भोजन की सामग्रीकी, राजपुत्र को सुगन्धित उपटनसे अन्हवाय, सुंदर बस्त्राभूषण पहराय, चन्दन चर्चित कराय. सप्रेम भोजन कराय, पानखवाय,

नृत्य प्रारम्भहुआ, प्रेमका प्रवाहहुआ, दीपकका बिकाशहुआ, चंद्रका प्रकाशहुआ, तारागण बिथुरगये, पुष्प सब फूलगये, त्रिविध समीर आनेलगी, कामको जगाने लगी, दुःखको भगानेलगी, आनंदसे रैन बिताने लगी, स्वस्थतासे सोनेलगी। पंरराजपुत्रको निद्राकहां! चित्त में चिंता महां! राम! राम! कर प्रातःकाल किया, प्रभु का स्मरण किया, प्रातःकृत्य किया, सुन्दरस्नानकिया, ध्यानमें चित्त दिया॥ इतनेमें महारेखा जगी, राजपुत्रके स्नेह में पगी, हस्त मुख प्रक्षालन कर, नवीन शृङ्गार कर समीप आई; राजपुत्र ने हृदयसे लगाई उसीसमय दासीने निवेदनकी आपके पिताने स्मरण कियाहै. आप के बुलानेको दूत भेजदियाहै। तब वह राजपुत्रसे कहने लगी कि हे राजपुत्र! बहुत दिवसांत में पिताने बुलाया है इसहेतु मैं निवेदन करतीहूँ मुझे पितासे मिल आने की आज्ञा दीजिये, आप सुखसे इहां निवास कीजिये न कुछ भयहै, न शङ्काहै, केवल मेराही एकडङ्काहै, यहस्थान बङ्काहै॥ चन्द्रकांत ने सोचलिया कि विधिने यह अवसर हाथ दिया, जितने काल दुष्ट संगसे बचे धन्य है, उपरले चित्तसे मन मलीनकर, श्वास खींचकर कहा। तुम्हारा वियोग सतायगा, चित्त पर क्या२ आयगा, पर तुम्हारे जानेमें विघ्न नहीं करसक्के, धीरज नहीं धरसक्के, मेरी सुधि न बिसार जाना, शीघ्रही पलट आना। इतना कह अङ्कसे लगालिया, पूर्ण स्नेह दरशा दिया, उसने यह जान लिया कि मेरे स्वाधीन है जानेसे पराधीन है, इहां किसीकी गमनहीं, मैं औरों से कमनहीं॥ प्रसन्न-

तासे पिताके स्थानको गई, इहां सब लखागई, राजपु-त्र एकान्त स्थल अवलोकन कर. रतिप्रभा के दर्शनों को मैना के बचननको अत्यन्तही रोया. आंशुवोंसे तन को धोया, परमेश्वरको यादकिया, यत्न सबसोचलिया, कुछ न बनपड़ा हाय रतिप्रभां कह सेजपर गिरपड़ा. जब वह चंडालन आई इसने दौड़कर गले लगाई ई-श्वरेच्छासे यह युक्ति बनाई कि तेरेजाने के पश्चात् मैं अकेला इस बाटिका में फिरताथा वृक्षोंको अवलोकन करताथा, इतने में कई एक कामिनी क्रमशःस्वरूप में मानो दामिनी आकाश मार्गसे निकलीं. मुझे बुलाने लगीं, प्रेमसे फुसलाने लगीं,परतुम्हारा नाम सुन हाय खाय. मन पछताय चलीगई इससे तुम्हारे पश्चात् मु-झे यह भयहै कि कोई पापिनी मुझे उड़ा न लेजावे,तुम से छुड़ावे, क्या२ दुःख दिखावे॥ यह सुन उसने सप्रेम आलिंगन कर, एक यंत्र लिखकर दहिनी भुजमें बाँध दिया, हरिहरका नाम लिया, कहने लगी अब कुछभय नहीं. किसी जादू गिरनी की ताब नहीं. निर्भय बिहार कियाकरो आनंदसे दिवस बिताया करो। फिर स्नान कर नवीन शृंगारकर, राजपुत्र सहित भोजनकर. आ-नंदमें मग्नहुई दुःख सब बिसरगई, नृत्य देखने लगी, गान सुनने लगी, रैन बितानेलगी, प्रातक्रियाकर फिर पिताके समीप गई, इसको घरभार देगई, राजपुत्र को आनन्दहुआ, प्रेमका प्रवाहहुआ किंचित् आधारहुआ, फिर राजमन्दिरके सम्पूर्ण स्थल अवलोकन करनेलगा, देखतेही देखते एक सन्दूक अतलससे मढ़ा दृष्टि में

पड़ा खोलकर देखा तो उसमें एक पुस्तक यत्न पूर्व्वक रखीथी बेखुटके उसको देखनेलगा स्वप्नभाग्य जगा पढ़-ते२ पढ़ा कि अगर कोई किसीकी मायामें फँसाहो. बि-पत्तिमें गसाहो, इसमन्त्रको इस रीतिसे स्मरणकरे, अ-पने मार्गपर पगधरे, स्वेच्छा पूर्वक गमनकरे फिर बिप-त्तिमें नहींपरै, मायाका कोई ऐसा मन्त्रनहीं ! इसपर चलनेका नहीं ॥ तब तो राजपुत्र सहर्ष उसका पाठ क-रनेलगा, सविध याद करनेलगा, बन्धन मोक्ष का यत्न हस्तलगा, मन्त्रको कण्ठकर पुस्तकको दबाकर, नारा-यणको स्मरणकर अपनी बाटली, शिरकी बिपत्तिटली। इतनेमें महारेखा आई, दूरसे चिल्लाई, राजपुत्र तुम्हा-री क्या इच्छाहै तुमको किसकी शिक्षाहै, कैसी यह रीति है, कैसी यह प्रीतिहै, मुझसे अवाकहो, चलनेको ताक हो. मुझे क्या भूलगये. किस ध्यानमें फूलगये ॥ तब राजपुत्रने मन्त्रका स्मरणकर, जगकर्ता का ध्यान धर, उसको उत्तर दिया कि तेरे समागमसे असमर्थहूं. जाने को समर्थ हूं. मेरा रक्षक भगवान् है. उसीका मुझे अ-भिमान है, अपना भाग्य देखले मेरा समागम इतनाही था ऐसा लेखले, इहांसे श्याम बदनकर, अपने स्थान को गमनकर. अब न मुझे यादकर। यह कह आगे बढ़ा, उसने माया का मन्त्र पढ़ा पर भगवत् की कृपा से इसे कुछ न गढ़ा, मार्ग में किञ्चित्ही नहीं अड़ा अ-पना मस्तक पटक दिया, उच्चस्वर से रोदन करदिया. बहुत कुछ यत्नकिया, व्यर्थ परिश्रम किया, तब तो यह जान लिया कि मैंनेही तो इसे यंत्र बांधदिया, माया से

मुक्त किया, मन में पछताई, पलटकर गृहमें आई, बहुत सी चिल्लाई, हृदयमें हार खाई, स्वस्थहो पड़रही, तन की कुछ सुधि न रही। फिर राजकुमार आगेको बढ़ा, मंत्रको सुचित्ततासे पढ़ा, रतिप्रभाका ध्यान चढ़ा फिर न कहीं अड़ा॥ किञ्चित् कालमें हरिके ध्यान में फिर पूर्व स्थान में प्राप्त हुआ. बंधन समाप्त हुआ। वस्त्राभूषण धरेथे जहां के तहां पड़ेथे अश्वको अवलोकन किया, उत्तम रीति से चित्तदिया तो जानलिया कि क्षुधा तृषाके कारण अप्राणहै, तब तो अपना शृङ्गार कर, हरिका ध्यान धर. जलाशयों में कूदनेकी क्या! हस्त पद्दतक प्रक्षालनकरनेकी सौगंदकर प्यादेपांय आगे बढ़ा॥

चतुर्थ कथा॥

राजपुत्र का उत्तम स्थानमें प्राप्तहोना एक राजपुत्री का समागम होना राजऋषि का मिलना फिर आगे निकलना॥

दोहा। बिपति वास बरणों सविध, सुखको करत प्रकास।
चरित मनोहर कथनको, हियमें होत हुलास॥

अतः पर्यन्त लेखनी ने श्याम अश्रु डाले, बिपत्ति कथाके बहाये नाले, हृदय में पड़ेछाले, बहुतसे सहेकसाले, अब उससे मुखमोड़, दुष्टता का संगछोड़. शंकरका ध्यानधरती है, सुख का कुछबर्णन करती है। अर्थात् राजपुत्रने जगदीश के चरणों में चित्तदिया, रतिप्रभा का ध्यानकिया, आगेको कदम बढ़ालिया, दिवस में नवीनफल भक्षण करते, उत्तम शीतल जल पान करते, संध्याको सुथलमें बासकरते, प्रातःकाल से मार्गचलते,

बन उपबन का बिहार करते, फूंक २ पगधरते, कुछ मास व्यतीत किये, एकदिवस दो घड़ी दिनरहे, साधुता का वेशगहे, एकरमणीय उपबनमें प्राप्तहुआ, चित्त प्रसन्नहुआ, उत्तम जलाशयके समीप बैठगया, चलते २ ऐंठगया, राजपुत्रीकें प्रेममेंपगा,राम २ कहनेलगा। इतने में क्या चमत्कार देखता है कि प्रारब्ध के जोर से, एकओर से स्त्रियोंका समूह चलाआता है इसने भय खाई, चित्त में कुछ और समाई फिर चित्तको स्वस्थ किया, उत्तम रीतिसे उसओर ध्यानदिया तो क्या देखता है कि कोई शशिबदनी राज पुत्री है. रूपमें एकत्री है, तामझाम पर सवार है, सखियां हजार हैं कोई चामर हिलाती हैं कोई बिजन डुलाती हैं, कोई तांबूल भक्षण कराती हैं, कोई गंगाजल पान कराती हैं, हाथों में कमान है आखेट का ध्यान है, शून्य स्थान है, हंसती हैं, खेलती हैं. कूदती हैं. उछलती हैं, सानंद बिहरती हैं। अचानचक एकदासी की दृष्टि जलाशयकी ओरगई, राजपुत्र के ठौरगई चलने से रुकगई। राजपुत्री ने पूछा ठठकने का क्या कारण है, इहां क्याभयानक है, देई है कि दानव है, अथवा कोई मानव है, जो तू चलने से ठटकी, अचानक अटकी। तब उसने उत्तम रीतिसे अवलोकन कर, चित्तमें शोच कर, बिनयकी. कि हे महारानी अपराध क्षमाहो, आज क्या पूर्णमासी है, चन्द्रकी प्रकाशी है! पर अद्भुत चमत्कार है, अभी दिवस घरी दो चार है दिन का अभाव नहीं. निशागम का भाव नहीं, चन्द्रोदय का समय नहीं

नक्षत्रों का उदय नहीं ! फिर इस सघन वृक्षके उसपार चन्द्रकी आकार मेरी दृष्टि आताहै नेत्रोंको लुभाता है ! सो क्या पर कोई शोभाका कोषहै. अथवा मेरेचक्षुवों का दोषहै, आतो किंतित् ध्यानदीजे ! इसओर अवलोकन कीजे ! इतने में राजपुत्री के बांमांग स्फुरणहुए नेत्र सजलहुए. गात्र सब शिथिलहुए, सहर्ष कहा बता ! फिर अपर दासियों सहित झांकनेलगी,नीची ऊंचीहो ताकने लगी ! इतनेमें एक और बोली, अपनी सुबानीको खोली कि यह वन अगमहै, यहां मनुष्यों की क्या गम है, पर यह आश्चर्य है, यह तो कोई पुरुष सधैर्य्य है, शोभाकी खानहै चन्द्रके समानहै, चितवन इसकी बानहै, ऐसा न कोई आन है। राजकन्या अवलोकन करतेही मूर्च्छित हुई, कामबाण से वेधितहुई, शीतल श्वासले पतितहुई. तबतो सबघबराई सुगंधित पदार्थ लाईं, तनमें सबलेप किया. नासिका में सुंघादिया. मूर्च्छा से जगानेका यत्न किया, उत्तम उपचार किया राजपुत्रीको सम्हाल. गोद में बैठाल बोधकरनेलगी आपकी क्यादशा है ? चित्तमें क्याबसाहै ? जो मुखसे नहीं बोलतेहो ! नेत्रनहीं खोलते हो, कोई झाड़नेलगीं, कोई फूकनेलगीं न्योछावर करने लगीं. दृष्टि उतारनेलगीं. क्लेश निवारनेलगीं, राजपुत्री चैतन्यहुई किंचित् उसासली.शीतल श्वासली.स्वबानी को खोली, दासियों से बोली. देखो यह कौन पुरुष है मेरे चित्तको हरता है प्रेमसे हृदय भरता है. बामांग फरकताहै, ईश्वर न जाने क्या करताहै इसका पूर्णखोज लेव, सबहाल जानलेव, मेरीबात चित्तधरो, फिर मुझे

उपदेशकरो। तब तो एकदासी जो चंचलथी अत्यंत ही बाचाल थी राजपुत्रकी ओरगई राजपुत्र भी नेत्रों भर शोभादेखतेही शिथिल था, पंचबाण से बेधित था, परसधैर्य था, अपनेको संभाले था, गौरवता से बिठाले था, रूपको छिपाये था, भस्मको लगायेथा, पर सूर्यप्रभा कहीं मेघोंसे ढकीहै, दासी सन्मुखआ प्रणाम करनेलगी, निवेदन करनेलगी बाबाजी आदेशहै आपका कौनसा देश है. कैसा यह भेष है. फकीरी का न कुछ लेस है। इसका क्या कारण है जो इसअवस्था में गृहछोड़ा मात पितासे मुखमोड़ा, आपका क्यानामहै, इहां क्याकामहै राजपुत्र उसकीबातोंसे ताड़गया,राजपुत्रीकी आसक्तता जानगया किंचित् मुसकराय तिरछी चितवनसे कहने लगा यथा "पंछी पथिक अतीथकी दिशा कौनसीजान" हम संसारसे बिरक्तहैं परमेश्वरमें आसक्तहैं.हमें किसीसे काम नहीं, मेरा कुछ नाम नहीं, दासीसे क्याबात करें! तेरी क्या श्रवण करें। चल अपनी मार्गले. इहांका न फिर नामले, वह भी चतुर थी जानगई कि निश्चय यह राजपुत्र है किसीपर आसक्त है, पलटकर राजपुत्री से निवेदन करने लगी कि हे राजपुत्री वह कोई उत्तम राजकुल में कुलीन है, किसी नवयोवना में लीन है, पर आपके आधीनहै, मुझसे बार्त्ता नहीं करता, मेरी विनय चित्तमें नहीं धरता, आप चलकर प्रश्नोत्तर कीजिये उसकी गौरवता पर ध्यान दीजिये, मेरा कहामान लीजिये! राजपुत्रीको यह बातभाई, चित्तमें समाई, सवार हो वहांपर आई, राजपुत्रका मुख चन्द्रं अवलोकन

किया, उत्तम रीतिसे ध्यानदिया, पान खाय. किंचित् मुसकिराय, कहा "प्रणामहैं! आपका क्या नामहै, हमपर कृपा कीजिये, स्वस्थान का प्रकाश कीजिये, मुझे धन्य कीजिये, मेरा स्थान पवित्र कीजिये; राजपुत्रने उत्तर दिया कि आप जीतेजी चार जीवोंपर सवारहो, हमसे दो चारहो, हम अकेले हैं तुम हजारहो, हम पृथ्वी में हैं तुम सवारहो, कैसे समानताहो, कैसे यह वार्त्ता हो, आपको राज्यका अहंकार है. हममें साधुता का प्रचार है. आप श्रम न कीजिये हमको दुःख न दीजिये. कोई छिनका बिश्राम है, फिर चलनेका कामहै। राजपुत्री को ज्ञातहुआ कि निश्चय यह राजपुत्र है बिना सन्मानता किये कुछ न कहेगा, नीचे उतरी. सन्मुख बैठगई, विनयकी, मैं पराधीन हूं. आपके स्वाधीन हूं. अब आप अपराध क्षमा कीजिये. मुझपर दया कीजिये एकनिशि बिश्राम कीजिये, सूखा रूखा प्रसाद कीजे, हरिहर का भजन कीजे, मेरी कथा सविधि श्रवण कीजे. फिर जो इच्छा हो सो कीजे, मैं इसीलोककी बासी हूं, आपके चरणोंकी दासी हूं. किसी प्रकार बिघ्न न करूंगी, आप की आज्ञा माथेपर धरूंगी; राजपुत्र छड़का था, बिपत्ति से भड़का था, यद्यपि यह जानलिया कि यह पापिन नहीं, मार्गियोंको सांपिन नहीं, उत्तमकुलकी राजकन्या है, रूप यौवन में धन्याहै, अंतःकरणसे आसक्तहो, परीक्षाके हेतु किञ्चित् क्रोधितहो बोला. इहां हमाराधाम नहीं किसीसे कुछ कामनहीं. न मैं भूँखा हूं. न प्यासा हूं, सुखसे दुरासा हूं. आप अपना काम कीजे. हरिका

नामलीजे इतना श्रवण करतेही राजपुत्री पृथ्वीमें धँसगई, बिपत्ति में फँसगई. मूर्छा आगई, ऊर्धश्वास लेने लगी, हाथ पाँव हिलाने लगी, राजपुत्रने निश्चयकिया यदि अब मैं कुछ कहूंगा तो यह प्राण तजदेगी, यमपुर का मार्ग लेगी, यह भी बहुत दिनोंका स्वजनों से बिछुरा था. दुःखसे हृदय भराथा, तिसपर राजपुत्रीकी यह दशा देख औरही थिरंगया, हृदय भरआया, नेत्रों में अन्धकार छागया। तब तो दासियोंने निवेदनकी कि आपभी अशंकहो, स्त्रीवधमें निशंकहो, अत्यंतही कठोरहो, जो इस सुकुमार रूप यौवनगर्विता राजकन्यापर दया नहीं आती हैं न मालूम आपको क्याभातीहै। तब राजपुत्र समाधान हो, राजपुत्रीको जगानेलगा सुगन्धि सुंघानेलगा, जब वह चैतन्य हुई. राजपुत्रको समीप देखा अपना सौभाग्य लेखा, विनयकी आपकी जो इच्छाहो मुझे स्वीकृत है; तब राजपुत्रने प्रसन्नतासे कहा चलिये अब बनमें बैठनेका अवसर नहीं, यह ठहरने की जगह नहीं. तब हर्ष सहित दोनों सवार हुये. उत्तम वह भूमिहै, वृक्षोंकी लूमहै, पक्षियों की धूमहै, अति सुन्दर कोटहै, बागोंकी ओटहै, रस्ता पवित्रहै. नगर विचित्र है. उत्तम बजार है, सत्यका प्रचार है, रक्षक हुशियार है अश्वके सवार हैं स्वर्णके द्वारहैं, चन्दनके किवारहैं ॥ ऐसी शोभा अवलोकन करताहुआ चन्द्रकांति राजपुत्री सहित राजमन्दिरमें प्राप्तहुआ फिर राजपुत्रीने स्नान कराय वस्त्राभूषण पहराय, उत्तम पदार्थ भोजन कराय, नृत्य वाद्य की आज्ञाकी, अपनी कथा प्रारम्भ की, कहनेलगी हे

राजपुत्र इस नगरका नाम बिद्यानगर है, इहांका राजा चन्द्रसेन मेरा पिता है, बुद्धिवती मेरानामहै, मेरे न भाईहै, न बहिन है केवल मेरा यह तनहै, मेरेपिताने उत्तम राज्य किया, प्रजाका काजकिया, पर अब योगलिया, राज्यको छोड़दिया, मेरेशिर भारदिया, आप एक बागमें शून्य स्थान में निवास करते हैं, मुझे आज्ञादी कि पुत्री तुम राज्यकरो, हरिका ध्यानधरो, कुलको कलंक लगाना नहीं, भागकर जानानहीं, उत्तम राजकुल देख अपना बिवाह करना सुखसे दिन व्यतीत करना; तबसे मैं स्वाधीन हूं, पर बिवाहकी मुझे इच्छा न थी पुरुष की मुझे कामना न थी, आज यह योग हुआ, आपका दर्शन हुआ, गर्वका धर्षण हुआ कामने सताया, आपसे मिलाया यह मेरी अर्जी है आगे आपकी मर्जीहै, जो कुछ मेरी कथा थी सत्य २ निवेदन की, अब जो आज्ञाहो स्वीकृत है अपराध क्षमाहो! उचित हो तो अपनी कथासे ज्ञात कीजिये तब तो राजपुत्रका पूर्ण बोधहोगया कि यह उत्तम कुलकी राजपुत्री है जैसा इसकानाम है वैसाही इसका कामहै इससे असत्य भाषण अच्छा नहीं, गोप्य करना उचित नहीं; तब कहने लगा चन्द्रनगर ग्रामहै, वहांका धर्मपाल नृपालहै, उसका मैं पुत्रहूं, चन्द्रकांत मेरानामहै; अदृश्य चन्द्रप्रभा पर आसक्तहूं उसीका में चित्तसे भक्तहूं, इसीपर राज्य छोड़ मात पितासे मुख मोड़ बन २ भटका, महारिखाके मायामें अटका, दैवइच्छासे निकास हुआ आपके समीपका बासहुआ; इतना श्रवणकर बुद्धिवतीने जानलि-

या कि रतिप्रभा महा सुन्दरी है. उसकी प्रीतिमें राज-
पुत्रपगाहै. उसीसे चित्तलगाहै अब मुझसे कैसे प्रीति
करेगा. इहां किसतरह रहेगा. इसपर कुछ उपाय नहीं,
दैवपर कुछ बसाय नहीं; शीतल श्वास ले कहा हेराज-
पुत्र आज पर्यन्त मुझे पुरुषकी चाह न थी, किसी को
अवलोकन कर मुझे डाह न थी, पर भावी प्रबल है।
आपके स्वरूपमें गँसगई, प्रीति में फँसगई यदि अब
आपसे अधिक सुन्दर राजपुरुष भी प्राप्तहुआ तो भी
उत्तम स्त्रियों को द्वितीय पुरुषसे प्रीति करना उचित
नहीं है, मेरा यह नेमहै, आपसे प्रेमहै। अब और से
काम नहीं कुलटा मेरा नामनहीं इस हेतु यह विनयहै
कि यदि उचित हो तो मुझे रतिप्रभा की दासियों में
स्वीकार कीजिये, मेरा जीवन दान दीजिये, यह उप-
कार कीजिये, नहीं तो मैं आपके बिरहाग्निमें जलूंगी,
आपही का नाम स्मरण करते करते मरूंगी; आपकी
आज्ञाभंग न करूंगी आपको अधिकार है अब जो
इच्छाहो मुझे स्वीकृत है, तबतो राजपुत्रको अत्यन्तही
निश्चय हुआ कि यह परम पवित्र है. उत्तमधर्म की
ज्ञाता है, यद्यपि रतिप्रभासे मेरी प्रीति है परइसका भी
त्याग अच्छा नहीं, तब आनंद पूर्वक कहनेलगा कि
मेरी जो कथाथी. आपने श्रवण करली, आद्योपान्त
हृदय में भरली, मेरी यह बान है, एकही आनहै जो
कदाच आपको प्रथम रतिप्रभा का बिवाह मेरे साथ
स्वीकारहो. उसका समागम अंगीकारहो तो मुझे आप
का कहना स्वीकृत है तबतो सहर्ष राजपुत्रीने कहा कि

आपकी आज्ञा मेरेमाथे पर है वह तो महारानी है पर मुझेआपके आज्ञानुसार उसकी दासीसेभी प्रीतिकरने में लज्जा नहीं, उसका दासत्व करने में मेरी कुछ न्यूनता नहीं, आप बेखुटके मनोरथ पूर्ण कीजिये निश्चय यह जानलीजिये फिर दोनों प्रफुल्लितहुये आनन्द में मग्न हुये स्नेह में बन्धनहुये समागम के उत्सुक हुये, फिर ब्राह्मणबुलाय गन्धर्व बिवाह कराय चित्रशाला अव-लोकन की, मनेप्सित पूर्णकी, रजनी व्यतीत की. प्रात कृत्य की। इसी रीति किञ्चित् काल व्यतीत किया सु-खका प्रवाहलिया एकदिवस रात्रिको रतिप्रभा का स्मर्ण आया, चित्त सन्नाया, मुखमलीनहुआ, अतिशय दीन हुआ, चन्द्रकांत की यहदशा अवलोकनकर बुद्धिवती ने अङ्कभर प्रश्न की कि आप के चित्तोद्वेग का क्या कारण है शीघ्रही प्रकाशितकीजिये, राजपुत्र ने शीतल श्वासले कहा कि मैंने अपने चित्तको इहांलगाया. कुल को कलङ्क लगाया. मेरेमित्र मुझसे क्या कहेंगे कि रति-प्रभाके हेतु गृहका त्यागकिया उसके नग्रका मार्गलिया पर पंथका क्लेश न सह सका, मध्यही में लटका, नाहक इतना भटका बचनका कच्चा है, मिथ्या वादीका बच्चा है यह कितनी बड़ी हानि है और दुःख क्या इसकीसमान है. यथा चौ० "यद्यपि जग दारुण दुख नाना। सब तें कठिन जात अपमाना" तब बुद्धिवती ने बिनय की महाराज आप अपना मनोरथ सिद्ध कीजिये. कुलको-कलङ्क न दीजिये. मन. बच. क्रम यह दासी है आप की यह खासी है ईश्वर को सहाय कीजे प्रातःकाल हेम

मेदनीनगर के जाने की मार्ग लीजे. हमको यह वचन दीजे कि कुशल पूर्वक मनोर्थ सिद्धकर इसीमार्ग आयेंगे तुमको अपने साथ लेजायेंगे, राजपुत्र इस धैर्यता को देखपरम प्रसन्नहुआ बोला बुद्धिवती आपको आप के पिता साहित धन्यहैं. आप समान न कोई अन्यहै तुम मेरेप्राणों में बसीहो. पूर्णरीतिसे हृदय में गंसीहो, ईश्वरेच्छासे सजीव रहा तो अपनेही समीप आया अवलोकन करना, नारायण का ध्यान धरना. सुखसे हृदय भरना; इसी प्रकारकी बार्तामें सूर्य उदयहुआ प्रातस्मर्णका समय हुआ, प्रात,कृत्यकर तैयारहुआ तबबुद्धिवतीने सनम्र बिनयकी यदि अनुचित न हो तो मेरापिता जो राजऋषिहै वर्तमान में अद्वितीयहै, उससे भेंटलीजिये, शरण कि कहाहै "साधुते होय न कारज हानि" राजपुत्रने कहा परम उत्तमहै तब राजपुत्री पिताके समीप गई कथा सब सुनाती भई. निवेदनकी कि उत्तम कुलका राजकुमार है, परम सुकुमारहै, धैर्यका सागरहै बुद्धिका आगरहै, परम नागरहै आपके दर्शनोंका अभिलाषी हैं, आज्ञा हो तो सन्मुख आवे महाराजनेकहा "बहुत सुन्दरहै" तब राजपुत्रको लेगई राजपुत्रने नमस्कार किया पिता साहित अपना नामलिया, महाराजने प्रेमालंगन किया, नेत्र मुख चुम्बन किया, हृदयसे आशीर्बाद दिया और कहने लगे कि आज दिवस धन्यहुआ जो आपसें समागम हुआ आपने हमारे ऊपर परम कृपाकी अब मेरी बिनय स्वीकृत कीजे, इसकन्या को दासत्वमें लीजे तब राजपुत्रने अधोमुख हो हाथ

जोड़कहा "स्वीकृत हैं"! परन्तु कुछ कठिनताहै उसको श्रवण करलीजे फिर आज्ञादीजे सो मेरे माथेपरहै, फिर राजपुत्रने पूर्व चरित्र सत्य२ बर्तमान समय पर्यन्त सविध बर्णन किये, और कहा अपराध क्षमाहो मुझेनिश्चयहै कि आपके इहां और राज्योंसे सुखकम नहीं किन्तु अधिकहै, रतिप्रभाकी जो शोभा मैंने श्रवणकी है उससे कुछ राजपुत्री कमनहीं. कहनेकी गमनहीं पर कठिनता यहहै कि रतिप्रभाकी प्रीतिमें मेरानामहुआ स्वजनों से विक्षेपहुआ, अब जो इहां बासकिया तो संसार हँसेगा राजकुलको धिक्कार करेगा. यही कहेंगे कि मार्गके क्लेशोंसे कच्ची खागया. बीचहीमें छागया. अतएव प्रथम मैं उसके नगरको जाऊंगा अपनी प्रारब्ध अजमाऊंगा कदाचित् जीता आऊंगा तो फिर आपके चरणोंपर मस्तक नवाऊंगा. अब जो उत्तम उपदेशहो मुझे स्वीकृतहै, तब महाराजने सानन्द धन्यबाद दिया राजकुलको आशीर्बाद दिया, कहा सत्यहै तुम समर्थ हो. यथा-"संभावित कहँ अपयश लाहू" मरणकोटिसमदारुण दाहू" उत्तम राजपुत्रों का यहीधर्महै जो कहना सो करना फिर पीछेको पगनहीं धरना. मैं परम प्रसन्नहुआ फिर सप्रेम एक रक्षाका मंत्र,राजपुत्रके गले में बाँध एक यन्त्रदे कहा कि यदि कैसाही, कठिन कुंठित समय आवे तो इस यन्त्रको अवलोकन करना उसके निवारणका यत्न इसमें हस्तगत होगा, बिपत्तिसे पार होगा, फिर किसीप्रकार की मायानहीं चलेगी, इतना कह आशीर्बाद दिया राजपुत्रको बिदाकिया. फिर राज-

पुत्र राजमंदिरमें आय राजकन्यासे बिदाहोने को उत्सुकहुआ, तब राजपुत्रीने राजपुत्रके मस्तकमें दधिका टीका लगाय चरणोंपर माथ नवाय बिनयकी कि दासी का स्मरण रहे जिसप्रकार आप बियोग अन्धकार में फसाये जातेहो उसीप्रकार स्वमुख सूर्य उदयके प्रकाश से विकासित करना आप के हस्तगत है फिर प्रेमाश्रवों को रोक राजपुत्रको बिदा किया. ईश्वर को सौंप दिया. राजपुत्र नेभी हृदयसे लगाय भगवतको मनाय कहा! तुम्हारा वियोग मार्गमें हमको सतायेगा दुखसे दिवस बितायेगा, परन्तु कुछ बशनहीं तुम्हारा हमारा ईश्वर रक्षकहै इतना कह मार्गीहुआ, राजपुत्री मन्दिर में गई. शोकमें निमग्न हुई दासीं समझाने लगीं. चित्त में बिश्राम लानेलगीं और कहनेलगीं यथा॥

दोहा। "दई २ क्यों करत है दई २ सो कबूल"।
"इन डारन फिर हौंयगे वेईसुखके फूल"॥

पंचम कथा॥

राजपुत्र का हेम मेदनीनगर में प्राप्तहोना, राजपुत्रीकी विपत्ति की वार्ता श्रवणकरना, फिर यत्न शोचना उसके हेतु उद्यत होना॥

दोहा। प्रेम निवाहन कठिन है, समुझ कीजियो कोय।
भांग भषन है सुगम पै लहर कठिन ही होय॥

प्रेमका समुद्र अपार है, जिसका न वारापार है, लेखणी हारगई जिह्वा फटकर दो होगई तथापि पीछे को पग धरती नहीं, वर्णन करने को रुकती नहीं। कहतेहैं

कि राजपुत्र की यह दशा हुई कि जब बुद्धिवतीका स्म-रण आताहै पद आगे चलनेसे रुक जाताहै, जब रति-प्रभाका ध्यान आताहै तब शीघ्रही आगेको बढ़ जाताहै "यथा" दुविध मनोगत प्रजा दुखारी, सरित सिंधुसं-गम जिमि वारी॥ इस ऐंचा खैंची में प्रथम दिवस बि-ताया, संध्या का समय आया सुथल में बास किया हरि के चरणोंमें ध्यान दिया. रात्रि बिताई, चित्त में यहआई कि इस द्विविध मनोगत में कैसे कार्य बनेगा, तब हृदय को शुद्धकर ईश्वरसे प्रार्थनाकर आगेहीका चलना नि-श्चित किया, मार्गपर चित्त दिया: फिर तो नित्यका यह कामथा, प्रातःकाल चलनेका धामथा, बसनेको शामथा लेने को हरिनामथा. देनेको न छदाम था; इसी रीतिकुछ दिवस व्यतीत हुये, पंथके अतीत हुये हेम मेदनीके स-मीपी हुये किसीसेपूछा यह किस ग्राम की सीमाहै? उत्तर मिला कि हेममेदनीनगरकी है। इतना श्रवण करतेही हर्ष से फूल गया, कुर्ते का बंद टूट गया आशा हुई कि इच्छा अब पूर्ण हुई, विपत्ति सब चूर्ण हुई आगे को बढ़ क्या अवलोकन करताहै कि स्वर्ण मई भूमि है वृक्षोंकी भूमहै, बन्दरोंकी लूमहै, एक ओर कदम्ब है एक ओर अम्ब हैं,सुरूकी सतरहैं. ताड़के छतरहैं, एकओर संतरा हैं एकओर चकोतरा हैं, एकओर नारंगी हैं इमरते की संगी हैं, केलोंकी क्यारी हैं, विहोंकी वारी हैं. मोरसी न्या-री हैं. वेलोंकी त्यारी है. अंगूर कीटट्टी है. मीठी है न खट्टी है, सेवती समानहै, गुलकेसरकी शानहै, जुही महकरही है. मालती लहकरही है. चमेली का वितानहै, गुलाब

सान ग्रानहे, मार्ग चौड़ी हे, कहीं न कनौड़ी हे, चोपड़ की लहरहे फुहारोंकी झड़हे, जलकी छिरकहे, झारूकी थिरकहे कीचहे न गर्द हे, गर्म हे न सर्द हे, शीतल सुगंधहे पवन ग्रति मंद हे, बन्दूकोंके सर्राटे हैं तोपों के अर्राटे हैं घोड़ोंकी हीसहे, हाथियोंकी चीसहे, सवारोंके गोलहें. प्यादे ग्रनमोल हैं. बजारका यह ठालहै उत्तम सब मालहै, शिरनी सब गर्म हे, पेड़े सब नर्म हैं, लड्डू की बहारहै, फेनी लगातारहै जलेबीका उतारहे, मोहन भोगका सुसारहे, गुलाब जामुनके लाले हैं, कचौरी के मसाले हैं. मेवोंके-ढेरहैं,लेनेकी देरहे, एकग्रोर जरतारी हे, एकग्रोर स्वर्णकारी हे, एकग्रोर सराफहैं, एक ग्रोर बजाजहैं, एक ग्रोर तमेरे हैं एकग्रोर ककेरे हैं; एकग्रोर सुनारहैं, एकग्रोर लुहारहैं, एकग्रोर चित्रकारी हैं एक ग्रोर पसारी हैं, ग्रद्भुत सब त्यारी हैं. सतरज सब न्यारी हैं. राजमंदिर ग्रनुपमानहै, जिसका न कोई समान हे रत्नोंसे जटितहै. मणियोंसे खचितहै. पर मलीनहैपुरुष तनक्षीणहै, चित्तपर उदासी हे. मुखपै न हांसी हे. राजपुत्र इस दशाको ग्रवलोकन करतेही सहमगया, चित्तमें बहम गया लोगोंसे पूछनेलगा कि ग्रापके चित्तकैसे हें! कुछ स्वरूपभी ग्रनैसे हें, किसीने इसके रूपपरमोहितहो उत्तरदिया कि हम क्या बर्णनकरें यहांका महाराजहै सब राजोंका शिरताजहै.धर्मका जहाजहै, उसकी एक कन्या थी, रूप यौवन में धन्याथी, उसके तनकी सत्कीर्ति देशों विदेशों में फैल रहीथी, जिसके हेतु राजकुमारोंकी भीर चारों ग्रोरसे ग्रा रहीथी परंतु वह किसीको स्वीकृत नहीं

करतीथी अपनेको स्वच्छ रखती थी, अकस्मात्, एक राक्षस संध्याके समय पुष्पबाटिकासे उठाले गया, सब को यह परम दुःख देगया इतना सुनतेही राजपुत्र शोक समुद्रमें धसगया चित्त का हुलास गया मुखका विकास गया, नेत्रोंका प्रकाश गया, हांय! रतिप्रभा कह मूर्छित हो पृथ्वीपर सोगया, हस्तपद झिड़कनेलगा, ऊर्ध्वश्वासलेनेलगा राजपुत्रकी यह दशादेख, एक राजदूत ने जानलिया कि. निश्चय यह राजपुत्रहै, राजपुत्रीपर आशिकहै उसीका यह भक्तहै, शीघ्रही महाराजसे निवेदन की, कि महाराज आज एक कोई नवीन राजपुत्र प्रतापवान सूर्य समानका आगमन हुआ, आज पर्यंत ऐसाराजपुत्र कहींसे न आयाहै न आयेगा, परंतु राजपुत्रीकी कथा श्रवण करतेही मृतकसा पतित हुआहै ऊर्ध्वश्वास लेताहै अपना जीव देताहै परम सुकुमारहै सब विद्यामें होशियारहै, शोभा में राजपुत्रीसे कम नहीं. वर्णन करने की मुझे गम नहीं. कदाचित् वह चैतन्यहोजावे तो शीघ्रही आपका शोक निवारण करे, सम्पूर्ण प्रजाका क्लेश हरे, आनँदसे हृदयभरे, परंतु बिलम्बका अवसरनहीं है. महाराज इतना श्रवण करतेही स्वतःउठदौड़े पैर में न पहिने जोड़े पीछेसे आये घोड़े, राजपुत्रके समीप पहुँच गये, राजकुमारको उठाकेहृदयसे लगालिया, अश्रुवों का प्रवाह बहादिया,उच्चस्वरसे पुकारउठे कि हे! दैवकैसा तू अनूठाहै हम पर कैसा रूठाहै, एक विपत्ति निवारण नहीं हुई दूसरीकी आमदहुई, यदि तेरी ऐसीही इच्छाहै तो शीघ्रही मृत्युदे, दुख समुद्रसे पारकरदे, अबमुझे कुछ

नहींभाता, अधिक क्लेश सहानहीं जाता, फिर सुगंधित पदार्थ राजपुत्रको सुंघाये सुंदरउपचार कराये,तब चंद्रक्रांति कुछ चैतन्य हुआ, नेत्र उन मीलन किये, हाय! रतिप्रभा कह रामके नामलिये, महाराजको शोकग्रस्त अवलोकन किया उनके चरणोंपर चित्तदिया परमधैर्यतासे बैठगया, पर बियोगाग्निसे ऐंठगया, महाराज राजपुत्रको ले गजपर सवार हुये. राजमन्दिरको गमन करतेहुये। इहां दासियोंके मुखसे राजकुमार की शोभा के समाचार श्रवण करतेही महारानी दर्शनोंकी उत्सुकथीं, महाराजकी सवारी निज मन्दिरमें बुलाली नेत्रों से जलधार बहाली, राजपुत्रको कण्ठलगाया सयत्न जगाया, उत्तम उपचार किये. यन्त्र मन्त्र बांधदिये, दम्पतिने सप्रेम दैवाराधन किया, नम्रतासे निवेदन किया कि यदि हमारे पुण्य बलहोवे तो राजपुत्रकी व्यथा निवारण होवे, फिर न कभी यह इसप्रकार सोवे, परमेश्वरको करुणा आई, यह बिनय सुहाई, राजपुत्रको चैतन्य किया, सबको आनन्द दिया चंद्रक्रांतिने उठकर सलज्जा नमस्कार किया, आद्योपान्त अपना हालबर्णनकिया फिर प्रश्नकी कि यदि उसराक्षसके गृहका इसदासको कुछ शोधमिले तो जानेको समर्थ है. नहीं तो जीवन व्यर्थ है. और सब यत्न अनर्थ है. तब महाराजने जानलिया कि निश्चय यह बीर है, परम सुधीर है, आज्ञाकी कि आपका शरीर दुर्बलहै, मार्गके श्रमसे निर्बलहै किञ्चित् बिश्राम करो धैर्यताको धारण करो. परमेश्वरको स्मरण करो चित्तमें मेरी आज्ञाधरो. फिर

सुचित्तता से उस मलेक्षकी कथा श्रवणकरो. तब आगे को पगधरो. राजपुत्रने बिनयकी, परम उत्तम है. यथा,

चौ०। सहसाकर पीछे पछिताहीं। कहें बेद बुधते बुधनाहीं॥

जो आज्ञाहो मुझे स्वीकृत है, इतना श्रवणकर दम्पति सानंदितहो. राजपुत्रके उबटनकर स्नान कराये, उत्तम बस्त्राभूषण पहराये सुगंधित लेप किया, केसरी चंदन चर्चित किया, पंथका श्रम गया. चित्तका किंचित् दुःख गया, मुख प्रसन्न किया, तांबूल से सुवासित किया, शंकरका ध्यानकिया, भयंकरता को टालदिया उस समय जब चन्द्रकांति की कांति को पूर्णदृष्टिसे दम्पति ने अवलोकन किया, संपति को लुटादिया, तन, मनको बारदिया सुखको भरलिया फिर भोजन मँगाय उत्तम पदार्थ जिवाये अंचवन कराय पान खवाय सेजपर लिटाये, आपने बिश्राम किया, फिर नृप रानी ने परस्पर यह भाषण किया कि राजपुत्र सुकुमार है कला कौशल्यता में हुशियार है, स्वरूप में अपार है बिद्याका आगार है. रतिप्रभासे कम नहीं, इसका कोई, समसर नहीं, यदि यह इहांका बास स्वीकृत करे तो अति उत्तम है पर आशा नाहीं. इसी रीति कुछ दिवस ब्यतीत कर राजपुत्र निवेदित हुआ कि. मस्तक पर आशीरबाद हो, जाने को आज्ञा हो तो उत्तम है, इसको श्रवण करतेही, महाराज का मुख मलीन हुआ अत्यन्तही दीन हुआ, बोध करनेलगे कि राक्षस बली है माया का छली है उसके यहांको मार्ग है न गली है इससे यहबात भली है कि अब रतिप्रभाकी आशाको त्यागदीजे, हमें सुख

दीजिये. इस मंदिरका बास कीजिये, इहां का राज्यकी-
जिये, रतिप्रभाकी कुछ खबर नहीं है मृत्यु हुई अथवा
सजीव रही है, तब राजपुत्र ने कहा आपने नीति कही
परन्तु मुझ को इसमें कलंक देंगे कि किसहेतु गया और
क्या करनेलगा, गृहका राज्य छोड़ क्यों भगा, कुल को
कलङ्क लगाया. बीरताका नाम लजाया इसकी सादृश्य-
ता में उसदुष्टके हस्तसे मृत्युहोना उत्तमहै, इसमें आप
विरोध न कीजे, दासको उसकी ओर का शोध दीजे,
आप हरिनाम लीजे. सुखसे राज्यकीजिये, जो कदाच
सेवक जीवसे सजीव रहा तो भगवत् की कृपासे, आपके
पुण्यसे उस राक्षसका शीघ्रही विनाश कर सेवकाई में
प्राप्तहोता है; इतना कह चलनेको उत्सुकहुआ रहनेको
निरुत्सुक हुआ, तब महाराजने पराधीनहो, आज्ञा दे,
सवारी दें, मार्गका शोध दे, सेवकोंसे कहा कि तुम इनके
संगजाव उत्तम मध्यम मार्ग बताव, कदाचित् राजपुत्र
मार्गकी कठिनतासे तुम्हारे बोधसे पलटआवे तो अच्छा
है, नहीं तो तुम हुशियार रहना क्षण २ के समाचारदेते
रहना, फिर आप उसी दुःख समुद्रमें निमग्न हुआ, रा-
जपुत्र मार्गी हुआ ॥

षष्ठ कथा ॥

राजपुत्रके जानेमें उस दुष्टकी माया मिटाने में,
राजपुत्री के छुड़ाने में फिर लौट आने में ॥

"चौपाई" हृदयराखिकोशलपुरराजा। प्रविशनगरकीजेसबकाजा॥

राजपुत्रने इसका स्मरणकिया, प्रभुके चरणोंमें चित्त
दिया, आगेका मार्ग लिया, थोड़ी दूर जानेपर क्या च-

मत्कार दृष्टि आया कि अग्नि अखण्डहै ज्वाला प्रचण्ड है, तब सेवकों ने निवेदन किया, कि बस ! यहींतक मनुष्यकी गम है, आगे मार्ग अगमहै; अब जो आज्ञाहो? राजपुत्र घोड़ेसे उतरबैठा कहनेलगा इस अग्निसे बिरहाग्नि कठिनहै। वह जबतनमें ब्यापरही है तो फिर अब इसकी क्या भयहै, तब हस्त पग प्रक्षालनकर. नारायण का ध्यानधर. राजऋषि के वचनोंका स्मरणकर, यंत्रको सुचित्ततासे अवलोकनकिया तोज्ञातहुआ कि यदिमाया रचित अग्निका कोटहो.ज्वालाकीओटहो.तो इसमंत्रका साधनकरे.ईश्वरका आराधनकरे,फिर निर्भयबिहारकरे॥ तब राजपुत्रने उसमंत्रका भजनकिया,चित्तको समाधान किया.आगेको पगदिया, राक्षसकेओरनिर्भयमार्ग लिया सेवक सब चिल्लानेलगे. उच्चस्वरसे बलबलानेलगे. विनय निवेदन करनेलगे कि राजपुत्र यह क्या करतेहो? जीतेजी अग्नि में धँसतेहो ! पर राजपुत्र ने इनकी ओर दृष्टि न की अपनेकार्य की पंथली, थोड़ीदूर जानेपर. प्रचण्ड पवन आनेपर आकाश शुद्धहुआ, अग्निकाकोट अदृश्यहुआ,निर्मल आभासहुआ,सूर्यका प्रकाशहुआ॥ अब क्या दृष्टिहुआ कि अग्निहै, न ज्वालहै.एककिलेकी दीवालहै। राजपुत्र फिर यंत्रको शोधनेलगा अपने मनोरथको देखने लगा, तब फिर ज्ञातहुआ कि जो कोई अगम गढ़हो तो इस मंत्रको पढ़कर फूंक दे तो मार्ग्ग सुगम हो. फिर न कुछ भरम हो. इतने समाचार दूतों ने अपने नेत्रों से अवलोकनकर. शीघ्रही महाराज से निवेदन की, कि महाराज राजपुत्र ने जातेही उस

अग्नि को शमित किया. अपने को अश्रमित किया, राजपुत्र आनंद से आगे को चला जाताहै, स्वच्छता से किला दृष्टि आताहै, महाराज यह समाचार श्रवण करतेही राजपुत्र का धन्यवाद करनेलगे, परमेश्वर को स्मरण करनेलगे, दान धंर्म करनेलगे. दूतोंको पारितोषिक दे आज्ञाकी कि इसीरीति राजकुमारकी कुशलता की खबर शीघ्र२ दियाकरो. इहां पर राजकुमार मंत्रको पढ़ २ कर किले की ओर फूंकने लगा, आगे को बढ़ने लगा, अकस्मात् घटा आई, प्रबल पवन आई. बिजली कड़कनेलगी अँधेरी लगने लगी, राजपुत्रने शीघ्रतासे यंत्र देख लिया, मंत्रको निकाल लिया, पढ़ना प्रारम्भ किया, मायाको टाल दिया, निर्मल आकाश हुआ, रवि का प्रकाश हुआ, माया सब नष्ट हुई, दुष्टको अनिष्टहुई. तबतो वह राक्षस स्वतः प्रगट हुआ, शस्त्रास्त्र को करमें लिया सन्मुख से दृष्टि आया, राजपुत्र के पकड़नेको धाया, राजपुत्र वीर था, परमसुधीरथा राक्षसको अवलोकनकर हर्षितहुआ, युद्ध को उत्सुकहुआ; फिर तो दोनोंओरसे शस्त्र चलने लगे, निज२शरीर बचानेलगे, कोई किसी को दबता नहीं था, किसीका तीर किसीको चुभता नहींथा, राक्षस मायासे छली था, चन्द्रकांत धर्म से बली था, फिर राजकुमार ने भगवत् को प्रणाम की, राजऋषि को नमस्कार की और चंचलतासे उछलकर राक्षस पर सवार हुआ, पृथ्वी पर पछार दिया, मस्तक से धर पृथक् किया, रक्त उसका बहादिया, परमेश्वरका नाम लिया, फिर अवलोकन किया तो जंगल है न प-

हाड़ है, कोट है न किलाहै, राक्षस का ढेर है जलानेकी देरहै, फिर राजकुमार आगे बढ़ा तो एक शशिबदनी पृथ्वी पर बैठी दृष्टि आई, इसने विचार किया कि निश्चय यही राजपुत्री है निर्भय समीप गया, पूर्ण दृष्टिसे अवलोकन करतेही हस्त पग ढीले पड़गये, अंग सब शिथिल होगये. प्रेमाश्रुवों के नाले बहगये मूर्च्छित हो गिरपड़ा. राजपुत्री को भ्रम हुआ कि यह क्या उपद्रव हुआ क्या और कोईराक्षस प्रगटहुआ, फिर सुचित्तता से अवलोकन करतेही निश्चय ज्ञातहुआ कि दैत्यहै न दानवहै, कोई उत्तम कुलका मानवहै, हृदय संतप्तहुआ, चित्त विक्षिप्त हुआ, कामाग्नि से तप्तहुआ, फिर विचार किया कि अब यह कैसेजगे कौनसा उपाय लगे यंत्र है न मंत्रहै न सुगंधितपदार्थ है. प्रेमसे पुकारनेलगी, राजपुत्रको जगानेलगी, जब वह न जगा तो राजपुत्री व्याकुलहुई. अपने भाग्यका वर्णन करनेलगी कि विधाता ने मालूम नहीं मेरे लिलाटमें क्या लिखाहै, कितने राजकुमार इस अभागे रूपपर मोहित हुये, इस राक्षसके हाथ यमलोक मार्गी हुये, हाटके हुये न बाटके हुये, घर के हुये न घाटकेहुये, मुझे इस दैत्यके माया में फँसाया, माता पितासे छुड़ाया अपनोंसे हाथधुलाया, पराधीनत्वसे बहुत रुलाया. आज यह परमसुकुमार नवीनराजकुमार इस कठिन स्थानमें दृष्टि आया उसे भी इस प्रकार सुलाया कि यंत्र लगता नहीं, मंत्र चुभता नहीं, फिर समीपजाय, चन्द्रक्रांतिको हिलाय उसका मस्तक उठाय निज जंघा पर स्थापितकर, उच्चस्वर से बिलाप

करनेलगी नेत्रोंसे प्रेमाश्रु बहानेलगी*और कहनेलगी कि हे दीनानाथ यदि मैं अपने तनसे स्वच्छ होऊं धर्म्म से पवित्रहोऊं किसी पुरुषको मैंने छुवा न हो, किसीका मुझसे समागमहुआ न हो, तो अवश्य यहपुरुष चैतन्य हो, मुझे अति धन्य हो; फिर राजकुमारी के शीतल आँशुवों के गिरने से राजकुमारकी विरहाग्नि शांतिहुई मुखकी अधिक कांति हुई, नेत्रोंको खोलदिया, परमेश्वर को स्मरणकिया और कहा "आजधन्य मैं राजकुमारी" "पायो दरश भाग्य अधिकारी" कितनी विपत्ति सही, कठिन मार्ग गही,. आज यह दर्शन हुआ, पंथका श्रम निवारण हुआ, अब मुझपर दयाकीजे, दासत्व में ग्रहण कीजे. राजपुत्री को यह बातभाई, अंतःकरणसे मुसकुराई. ऊपरसे यह बात बनाई कि आप सुरसभाषण में चतुरहो, कामकलामें आतुरहो,, पर यह नहींजानते कि आप कौनहो मैं कौनहूं. कैसा यह समारम्भ. कैसीवार्त्ता का आरम्भ! तब राजपुत्र ने प्रेमका उन्माद लिया. प्रश्नका उत्तरदिया कि आप ने खूब छान लिया, मेरा परिश्रम जांचलिया मैंने आपकेहेतु कैसा कठिन यत्नकिया, अग्निमें अपना मस्तक होमदिया. राक्षससे प्रबलयुद्ध किया उसका संहारकियां, आपको बंधनसे मुक्त किया, जिसका यह परिणाम लिया कि "तुम कौनहो मैं कौन हूं" यथा- "हायदई कैसी करों अनचाहे को संग" दीपक के भांयें नहीं जरंजर मरत पतंग" तब तो राजपुत्री

---

* बुद्धिमानों का मत है कि क्लेश के आंशु तप्त होते हैं स्नेह के शीतल होते हैं॥

चित्तमें प्रसन्नहो, ऊपरसे अप्रसन्नहो बोली कि आपका श्रम व्यर्थ न जायगा, अतिशय आनंद करायगा, जब मैं गृह जाऊंगी, पिताको यह कथा सुनाऊंगी, आपको इतना दिलाऊंगी कि चलते नहीं बनेगा,, जब राजपुत्र ने यह लालचकी बातसुनी, हृदयकी प्रीति गुनी. हँसकर कहनेलगा कि धन्यहै, न्याय इसी को कहते हैं, आपने खूब चित्तदिया, मेरा श्रम जान लिया, अपना राज मद प्रगटकिया उत्तम यह उत्तरदिया, पर इतना न शोचा कि यदि मुझे राज्य का लोभहोता तो क्या आपके राज्यसे मेरा कम है, इसीप्रकार परस्पर प्रश्नोत्तर होनेलगे, नेत्र बाण चलनेलगे। इतने में महाराजसे दूतों ने सपदजाय निवेदन किया कि महाराजका बोलबालाहो. शत्रुकामुख कालाहो आपके धर्म से. उत्तम सत्कर्मसे ईश्वर कृपाल हुआ, राजपुत्र बिजयी हुआ अद्भुत संग्राम हुआ, राक्षस का काम तमाम हुआ, राजपुत्र का पृथ्वीपर नाम हुआ. न वहां किलाहै न गढ़ है, मंदिरहै न मढ़है, बनहै न खान है. निष्केवल मैदान है. अब स्वच्छता पूर्वक राजपुत्री और राजकुमार दृष्टि आते हैं इतना श्रवणकरतेही महाराजकी कांति बर्द्धित हुई. सभा सब प्रफुल्लित हुई, दूतोंके मुख रत्नोंसे भरदिये, रहनेको घरदिये, नौबतपर चोबहुई. डङ्के की धौंसहुई, तोपोंकी बाढ़ हुई, बन्दूकेंलगातार हुईं, नगर में धूमहुई, बधाई की रसूमहुई, फिर आज्ञाहुई कि शीघ्रही सवारी तैयारहो, राजपुत्रकी ओर को प्रस्थानहो, नगरीका शृङ्गारहो. दधि दूर्वाका प्रचार हो, मार्ग सब सुगंधित जलसे सिंचाई जावें, गृह २ केले

लगाये जावें, पांवड़े बिछायेजावें, जांगड़े कड़खासुनावें, वेश्या सब शीघ्र आवें, उत्तम बधाई गावें, राजपत्नी को समाचार देव, मंगलीक कलश धरादेव, सुन्दर आचार करें. गानका प्रचारकरें, फिर आप सवारहुये. उसओरके मार्गीहुये. राजपुत्रके दर्शनोंकीचाहलगी. अगम वह बाट लगी. ज्योंत्योंकर विपत्कटी. बैठतेउठते पंथकटी. दोनोंपर दृष्टिपड़ी. प्रेमार्णवकी लहरबढ़ी. हाथीसेउतर शीघ्रही उस ओरको दौड़े. जबराजपुत्रने महाराजको आतेअवलोकन किया तब मर्यादासे राजपुत्रीका समीप त्यागदिया. महाराजको प्रणामकी. महाराजने कण्ठसे लगाया. शोकाग्नि संतप्त. हृदयकेदारको प्रेमाश्रुपातसे शीतल कर राजपुत्रीको आलिंगन दिया, सप्रेम मुख चुम्बन किया, फिर रतिप्रभाको सुखपालमें चंद्रकांतिको अपने समीप गजपर बिठाय सवारी लौटादी, नगरका मार्ग लिया. सब को आनंद दिया, नगरके समीप पुर स्त्रियां मंगलीक गान गातीहुई, कलशले शोभितहुई महाराज द्रव्यलुटातेहुये, दीन दरिद्रियोंको निहाल करतेहुये मंद २ गति से शुभलग्नमें पुरप्रवेश करतेहुये राजमंदिरको महारानी दासियों सवासनियों सहित द्वारपर कलशधराय, मंगलीक गीत गाय, महाराज और राजकुमारकी आरती कर, अनेकन्यौछावरकर प्रवेशकरातीहुई. उससमय जो सुख पुरजन परिजनको आबाल वृद्ध सहित हुआथा अवर्णनीयहै फिर महारानी ने प्रथमराजपुत्रको कण्ठसे लगाय, क्लेश को बिताय, शंकर को मनाय तन मन वार दिया. फिर पुत्री से मिलाप किया. रोदन का शब्द उच्च

किया, अश्रुवोंको बहादिया. तब चित्तको धैर्य दिया. सब का आशीर्वाद लिया. फिर रतिप्रभा निज सखियों से मिलनेलगी. कण्ठसे बिलगनेलगी. रोनेलगी. धोनेलगी. विपत्ति वार्त्ता कहनेलगी, सुखसे हिया भरनेलगी आनंदसे रहनेलगी, प्यारी सब हँसनेलगीं कि आज के समयको धन्य है जो आपका समागम हुआ. राजपुत्र को भी धन्य है जिसके चरणों के प्रसाद से पुनर्दर्शन हुआ. कैसा वह बीर है परम सुधीर है, रूपमें अपारहै, अति सुकुमारहै, चन्द्रसा बदनहै, सुखका सदनहै, चितवन काम बान है, जिसका न कोई समान है. आपको मेरी आन है, सत्यका बखान है. आप इतनी शिथिल क्यों हो ?- क्या राजपुत्रकी नजर तो नहीं लगी ! उसके प्रेममें तो नहीं पगीं ! कहीं रात्रिको तो नहीं जगीं ! इतना श्रवण करतेही राजपुत्री नेत्र चढ़ागई. सबसे पृथक् होगई. अंतःकरणसे बोधितहो, ऊपरसे क्रोधितहो कहनेलगी कि तुम सब धन्यहो बातों में पशुवन्य हो. इसी दिवसके हेतु हमने तुमसे प्रेम किया तुमको सहबास दिया. अब तुम अतिशय ढीठ हुई मुझसे अति ईठ हुई. बातों को बनानेलगीं, नयनों को चलानेलगीं, हँसके सुनानेलगीं, अपने समान जाननेलगीं, मेरा मुख मौन है न जानूं वह कौनहै, मैंने पूर्ण देखानहीं उसे कुछ लेखा नहीं; इतना सुनतेही सखियां सब हँसनेलगीं परस्पर विहँसनेलगीं, राजकुमारी को सुनाय आपस में कहनेलगीं कि राजपुत्री सज्ञातहै राजपुत्रसे अज्ञातहै, भोली है भाली है. चंचलतासे खाली है. यह भी नहीं

जानती है कि अद्यापि मैं किसके फंदे में फँसीथी, किसने मुझे कितने परिश्रमसे निकासी थी, कैसे फिर यहां आई, मात पिताने हृदयसे लगाई, न्याय इसीका नाम है, उपकार कर्त्ताकी यही इनामहै चलो अपनही राजपुत्रको मानेंगे, अपने प्राणदाताजानेंगे, अपना तनमन वारेंगे, विपतिको बिसारेंगे. इन परस्परकी बातोंमें प्रेमकी घातोंमें राजकुमारीके हृदयका कमल फूलगया दुःख सब भूलगया, परंतु अंतःकरण के प्रेमको प्रगट करना उचित न जानकर भौंहोंको तानकर. निष्ठुर हो बोली कि अरी! तुम बड़ी छिनालहो, इतनी बेतालहो, मेरी क्या कालहो, जो ऐसे वचन कहतीहो मुझे कलंक धरतीहो अब क्या मैं अपने प्राण तजूं अथवा किसी ओर को भजूं तब उत्तम न्याय होगा, तुम्हारा जी सनाथ होगा, इतना कह माता के समीप बैठगई. माताने दुलार किया. अतिशय प्यार किया दासियोंको छुत्कार दिया कि तुम में क्या मर्याद नहीं, नीति क्या याद नहीं जो रतिप्रभाको खिजाती हो, अपना दिल बहलातीहो किंचित्‌भी नहीं शरमाती हो, महाराज का यह हालथा. पुरजन निहालथा, नृत्य चहुं ओर था, दानका शोरथा. फिर भोजनोंकी तैयारी हुई, रात्रि की अंधियारी हुई. दीपककी उजियारी हुई, मानो फिर दिवारीहुई, फिर आनंद सहित भोजन कर तांबूल भक्षण कर हरीको स्मरणकर निद्रावश नेत्र किये स्त्रियों ने रतजगे किये, इसीप्रकार नित्यशः दिवस बितानेलगे राजपुत्रको निहारने लगे॥

सप्तम कथा ॥

चन्द्रक्रांति और रतिप्रभाके बिवाहमें, परस्पर के समागम में ॥

दोहा। विपति विहानी ईश बश, सुरति समानी नेम।
दम्पति के अनुराग को, बर्णत सुखद सप्रेम ॥

इससमय तक लेखनी विपति कहानीको लिखचुकी अब बिवाहचरित्रके बर्णनकरनेको झुकी—अर्थात् राजा और रानीको प्रेमहुआ. नित्य का यह नेम हुआ कि प्रातःकाल अरुणोदय में उठना, प्रातक्रिया कर प्रभुका स्मरण करना, फिर चन्द्रक्रांति और रतिप्रभाको अवलोकन करना, आनंदसे हृदय भरना. एक दिवस दम्पतिके चितमें आई कि आज पर्यंत अपन ने ईश्वर की दयासे उत्तम राज्यकिया, सुखका सब साज किया. फिर उसीकी कृपासे रतिप्रभा उत्पन्नहुई, सर्ब लक्षण सम्पन्न हुई, जिसकी सुन्दरता अपारहै पवित्र आचारहै। उस के हेतु कितने राजपुत्र इहां आये और ब्यर्थ दिवस ब्यतीतकर अपने नगरको सिधाये कितने उस राक्षस के हाथ स्वर्ग के बासी हुये, कितने स्वभाग्यबश राज्य तज उदासी हुये.परन्तु पूर्ण विचार कर कहिये तो सही कि आज पर्यंत इस राजपुत्र के समान सुन्दर स्वरूप मान और भी कोई आयाहै. तुम्हारे ध्यान में समायाहै, तिसपर भी कैसा यह बीरहै, परम गंभीरहै, जिसने कितने परिश्रम से उस राक्षसको बध किया, रतिप्रभाको बन्धन से मुक्त किया. परंतु आज तक उस के मुखपर कभी इसकृत्यके गर्वका चिह्न तुम्हारे दृष्टि आयाहै? इस

से निश्चयहै कि वह परम कुलीनहै, भगवत स्मरण में लीनहै, फिर अपनको अब एक दिवस रतिप्रभाका बिवाह करनाही है इससे उचितहै कि चन्द्रकांतिहीके साथ यह संबंधहो, तो उत्तम प्रबंध हो, वहभी अपने परिश्रम का पूर्णफल पावे, आनंदसे दिवस बितावे महारानी इस बाणीके श्रवण करतेही अत्यन्तही प्रसन्नहो सम्मतिदेने लगीं कि इस कृत्यसे अधिक अब और क्या है, शीघ्रही लग्नका शोधन कराइये, बिवाहकी सामग्री एकत्र कराइये, जब परस्पर में इसका पूर्ण निश्चय होगया तब महाराज ने सभामें सुशोभितहो मंत्री से आज्ञाकी कि रतिप्रभाके साथ चन्द्रकांति राजपुत्रके सम्बन्ध करने में हम दम्पतिकी सम्मतिहै, इसमें तुम्हारी क्या मति है? तब मंत्री ने सभासदों सहित विनय की, कि महाराज! यह कार्य आपने परम उत्तम बिचारा. सबका यह मत है शीघ्रता कीजिये, यह अपूर्व यश लीजिये, महाराज ने कहा "सिद्ध गणेश" फिर ज्योतिषी बुलाय शुभलग्न मुहूर्त्त दिखाय विघ्न विनाशक गणपतिको स्थापित कराय सामग्री एकत्र कराने लगे, देश देशांतरोंको निमंत्रण गये, चतुर्गुणी बुलाये गये, मण्डफ की रचनाका प्रारम्भ हुआ, स्वर्ण के स्तम्भ रचे हरित मणिके रसाल पत्र बिरचे, विचित्र मणि मुक्तासे बंदनवार बांधे, शुक पिक, मयूर मणिमय बनाय पृथक् २ स्थापितकिये, रत्नमय भूमिकी रचना अलौकिककी, राजपुत्रको दूसरे महल में सुशोभित किया, बिवाह होनेका समाचार दिया, राजपुत्र श्रवण करतेही हर्षित हुआ, ईश्वर को आरा-

धित हुआ, विनय निवेदित हुआ कि आपकी जब कृपा होती है मनेप्सित सब पूर्ण होती है, फिर मित्रों से मिलाप करनेलगा, इहां सखियों ने राजपुत्री को खबर सुनाई, हृदयकी प्रीति बढ़ाई, परस्पर हास्य करनेलगीं, गान और नृत्य करनेलगीं, देवतोंको पूजनेलगीं, कुल देवको मनाने लगीं, किंचित् दिवस व्यतीत होने पर लग्न का समय आया, सब को हुलास आया, राजपुत्र से गजानन पुजानेलगे, मंगलीक कलश धराने लगे, कुलकी सब रीतिकी, वेदकी सुनीतिकी, फिर सेवकों ने चन्द्रकांतिको सुगंधित उबटन लगाय सुन्दर स्नानकराय, दिव्य वस्त्राभूषण पहिराय, मृगमदका चन्दन लगाये, रुचिर कङ्कन बांधदिया, मनोहर मौर लगा दिया, गजपै सवार करादिया, चमर छत्र होनेलगा, चलनेका डङ्कालगा, रंग विरंगकी शानलगी, ऊंटोंकी कतारलगी, उनके पीछेका यह हालहै, कोतलघोड़ोंकी चालहै रंगमें अनोखे हैं, कीमत में चोखे हैं, सुन्दर लगामहै चलते सहगाम हैं, जरतारी झूल है, गोटोंके फूल हैं, जड़ाऊ जीनहै, तनसे सब पीनहैं, फिर पल्टनें निराली हैं, हरित पीत काली हैं, घोड़ों की सवारी हैं, तोपोंकी वारी हैं, निशानोंकी कतार है, रमसींगो की धुतकार है, डङ्कों पर डङ्काहै लगानेवाले बङ्काहै, तासोंके अर्राटे हैं, तम्बूरोंके खर्राटे हैं, विगुलोंकी अवाजहै, रंग२की साजहै, जांगड़े अलापते हैं, नकीब पुकारते हैं, हाथियोंकीसवारी है, जराऊ अम्बारी है, हलकों पर हलके हैं, मदसे सब झलके हैं, बरात का यह ठाटहै, देखनेवालोंको नहीं बाट

हैं, ब्याहकी रसूमहै, लोगों की धूम है, स्त्रियें सब गातीं हैं, झरोखोंसे ताकती हैं, भगवत को मनाती हैं, अंचल कर मांगती हैं, बर दुलहिन खुशी रहें, शत्रु इनके दुखी रहें, लेनेको अगवान आये, सुन्दर समाज लियाये, परस्पर मिलाप किया, कण्ठ भुज मिला दिया, फिर कुशल प्रश्न पूंछकर, मिर्चवानी का प्रचार कर, जनवासे को गमन किया, उत्तम थलवास दिया, सबों ने विश्राम किया, मिजवानी के पदार्थ आये, उत्तम बनाय लियाये, लड्डू हैं, जलेबी हैं, घेवर हैं, फेनी हैं, खुरमा हैं, खाजा हैं, पेड़ा हैं, बरफ़ी हैं, केसरी हैं, सिंगरफी हैं, बहुविधि के अथाने हैं, स्वादके खजाने हैं, इसके पश्चात् आगोनीकी टंकार हुई, बाजोंकी झंकारहुई अंनारदानेछत बांधनेलगे मिहताबों के झाड़ बननेलगे, चंद्रज्योति ने विकास किया, रंग २ का प्रकाश किया, बाणोंके सड़ाके हुये, बेलोंके तड़ाके हुये, बम्मने धम्मकी; दो अवाजी आकाशगये, सितारे सब बिथरगये, भौंर मछली फिरने लगीं अपना रंग बनाने लगीं, चरखी का चक्र हुआ, रंगोंका आभास हुआ, फुलझड़ियोंसे फूल बरसतेथे, जुहीको देख लोग तरसतेथे, बाजे सब बजतेथे, नटी सब नचतेथे, फिर दूलह राजमंदिरके द्वार आया, महाराजने शीश नाया, सादर उतार लिया, चौरंग पर बिठादिया फिर ब्राह्मणोंने यथेष्ठ पूजन कराया, महाराज ने राजकुमारको टीकालगाया, हत्थी और घोड़ेदिये, कपड़ोंके जोड़ेदिये, मुहरोंकेतोड़ेदिये, शस्त्र सबउत्तमदिये, फिर राजपुत्रकी सवारी जनवासेको गई, इहां चढ़ावकी

धूम मचगई, गजमुक्तोंसे चौकपूर, कलश स्थापितकर, गजानन कोमनाकर, राजपुत्रीका आवाहनकिया, उत्तम पांवड़ा डालदिया, ब्राह्मण मंत्र पढ़नेलगे, आशीर्वाददेने लगे फिर स्वस्तागमकर चढ़ाये का प्रारम्भकर आनन्द बढ़ानेलगे, सविधि चढ़ानेलगे ॥ " यथा "

"कवित्त" शीश फूल बीज अरु बेसर शुचि करनफूल, बंदियां अरु बेंदा चांद नीको सरसानो है। दुलरी अरु तिलरी सर पचलरी हमेल रुचिर, कंठलरलरी महा शोभाकी खानोहै॥ बाजूबंद बांकें अरु बोंटा"भवदेव"भने, गजरा अरु गूजरी जरत बरणतहरपानोहै। पायँन है पायजेब बिछिया अरु अनोटा छबि, चन्द्रहार देख मन चन्द्रहू लजानो है॥

इसके पश्चात् फिर भोजनोंकी तैयारीकर, बरातियों को बुलाकर, सादर पग पखारकर,प्रेमसे बिठालकर, परसने का प्रारम्भ किया॥ यथा

"कवित्त" मुगद मलाई अरु मूंगीके लाडू बने,मधुर जलेबी अरु फेनी सरसाई हैं। खुरमा अरु खाजा बूंदी पेरा बहुभांतिन के,घेवर गुलाब जामुन उत्तम सापसाई हैं॥ पूरीं अरु कचौरीं बहु सुन्दर "भवदेव"भने, सरस विधान बहु शुचितासे बनाईं हैं। परसे हैं दूध दधि बूरो सुगंध नीर, सादर जिंवाय त्रियन गारीरुचि गाई हैं॥

फिर वेदकी विधानसे मंगलीक गानसे परिक्रमाकी रीतिकी, पौंपखरई सप्रीतिकी, आदरसे, दानसे, मानसे सनाथ किये, सेवक सुहागनको उत्तम शुचि बस्त्र दिये, फिर राजकुमारको बहुतसा दायजा दिया, सविनय बिदा किया, अब राजपुत्रकी बिपत सब चूरणहुई, मनसा सब पूरणहुई, रतिप्रभासहित आनंदसे बिहारकरनेलगे, हर्ष से दिन बितानेलगे॥ "यथा"

"कवित्त" रँगमगी सेजपर जगमगी शोभाचारु, मणि मय मंदिर मयूखन अथाहकी। "उदयनाथ" तामें प्राण प्यारी अरु प्यारेलाल, कोककी कलान केलि करत सराहकी॥ किंकिणीकी धुन नूपुरन नाद सुनसुन, सौतिन के बाढ़त विखाद बाद गाह की। त्रिभुवन जीतके उछाह सों बजत मानों, नौबत रसीली मन्मथ बादशाहकी १ राधा बनवारी संगकरत अनंगरंग, ढरत चहूंघा वास फूलन के ढेर की। "उदयनाथ" सुकवि सुहाई सखी श्रवणनको, किंकिणि झनक कामनौबतसे झरेकी॥ मोतिनको हार चारु अटको कुचन तरे, लटकत डुलत सोहै शोभा घने घेरकी। पांतपांतह्वैकर नक्षत्रसबैदेतमानो, पुण्यहेतपूरणप्रदक्षिणासुमेरकी २ दम्पति सुरत विपरीत को रमत, कोक की कलान केल अखिल अवधारे हैं। भनत "कवींद" बिहँसत बतरात सरसात अंग अंगन अनंग रंगवारे हैं॥ उचटे ललाट ते समित वे नाग मोती, ऐसे केश पाशनपै परे उरझाये हैं। बदन नक्षत्रपति क्षत्र पति हुकमतें, कूदे मानो तमपै कतारे बांध तारे हैं ३॥

जब समस्त रजनी ब्यतीत होकर प्रातःकालसमीप आया तब परस्पर क्या दशा होती है॥ "यथा"

"कवित्त" अरुसोहैं नयनकर सरसोहैं मुसक्यात त्यों त्यों, अकुलात ज्यों ज्यों होत हेली प्रातरी। दोऊ वे परस्पर पीवतहैं अधर रस, चूम चूम चटकीले मुख जल जातरी॥ भनत "कवींद" भर २ अंक ह्वै निशंक नेह भरे २ फिर २ बतरातरी। बिछुरन कांतरी दुहूं के गातबीते जात दोऊ लिपट २ जाततऊ नेक न अघातरी॥

फिर प्रातःकाल होनेपर दम्पति ने जब चित्रशाला का त्याग किया उस समय रतिप्रभा की क्या शोभा है। "यथा"

"कवित्त" कर रति रंग पतिसंग तें सलोनी प्रात, उठी अँगरात ओप उलही अपारहै। भनत "कवींद" टूटे सकल शिंगारहैं